

धूप का टुकड़ा



राजकमल प्रकाशन

नयी दिल्ली पटना

in the

धूप
का
टुकड़ा

अमृता प्रीतम

अनुवादक देविन्दर

मूल्य ₹ 30 00

© अमृता प्रीतम

प्रथम संस्करण 1966

द्वितीय संस्करण 1982

प्रकाशक राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड

8 नेताजी सुभाष मार्ग नयी दिल्ली-110002

मुद्रक रुचिका प्रिंटर्स द्वारा गीतम आर्ट प्रेस

नवीन साहदरा, दिल्ली 110032

आवरण इमारोज

DHOOP KA TUKARAA

Poems by Amrita Pritam

अमता प्रीतम की कविता-आ मे रमता, हृदय म कमकती व्यथा वा धाव लेकर, प्रेम और सौन्दर्य की घपछाह बीधी म विवग्ने के समान है, जहा वियोग तथा अतृप्ति के तीखे, नुकीले वटि भावना के सुकुमार चरणा को प्रेम के चंचल निमम स्वभाव के कारण, क्षत विक्षत करते रहते हैं। ऐसी गहरी, दद मे डूबी, प्राणिक सवेदनाआ के गीत कम ही देखने को मिलते है। यौवन की गोपन आकाधा धरती की रज पर उतरना चाहती है और उसका प्रत्येक कण, जान नियति के किस विधान से, चिनगारी बनकर, अत्रोध हृत्य म उगे प्रणय तिनका के स्वप्न नीड को राग कर देता है। जिस प्रकार कायल और चातक प्रेम ने पक्षी है, उसी प्रकार अमृताजी भी मुरयत प्रणय तथा राग भावना की जा य गायिका है जिह ग्रीव पचयित्री सफो की तरह प्रबल अतृप्त यौवन-आवेग नय-नये प्रणय सवेदना म क्षवज्ञोरता रहता है। वह प्रेम ने वसन्त की दूत हैं और इस पृथ्वी पर जहा भी जाती हैं प्रेम की कभी न बुझनेवाली आग और सौन्दर्य की स्वप्न-स्पश लपटें बरसाने जाती है। भाव स्वप्ना की सूक्ष्म काधा मे उनकी कविता मानवीध प्रणय वेदना वा दु सह भार तथा जीवा यथाथ की अदम्य पुकार सँभाले हुए युग कदम तथा कटु अनुभूतियो के ककड पदथरा पर चलते, ठोकर खाते, जैसे, मी-दयचेतना मे नये अधखले क्षितिजा म मुका प्राण उडती हुई आगे बढती रहती है। उनके छोटे-छोटे तीत्र सवेदना भरे चरण नावक के तीरो की तरह मम मे गम्भीर धाव करते हैं। आज के कवि-समीक्षका व शब्दा म उन्हाने छक्कर क्षण को भोगा एव जीवन को जिया है और उनका अपरिहाय व्यथा रस अपनी कविता की अजुलि म भर भरकर पिया है। अमताजा धरती के जीवन के गीत भी गाती हैं। वह युग सधप के प्रति प्रबुद्ध होने के कारण प्रगतिशील भावधारा से प्रेरित हैं। किंतु प्रेम के प्रति एकाग्र समपण ही उनकी जीवन साधना तथा आत्म विकास का एकांत पथ है।

शिल्प की दृष्टि से अमताजी आधुनिक कला-बोध की कवयित्री हैं। उनके बिम्ब तथा प्रतीक उनके अत्यंत निजी तथा अत्यंत मौलिक हैं। उनकी भाव प्रक्रिया इतनी वाच्यमयी होती है कि उनकी छंद मुक्त पक्तिया भी पढते ही कण्ठस्थ हो जाती हैं, जो गुण हिंदी की नयी कविता से एकदम लुप्त होना जा रहा है। अमृताजी की बाह्य आकृति जितनी आवपक है अपने भीतर वह अपनी मूढम वाच्य-काया म भी उतनी ही मनोरम है, एसा पक्षपात विधाता के यहाँ कम ही देखने को मिलता है।

उनकी कला-दृष्टि जिस वस्तु या दृश्य वा भी स्पस करती है उस गहरी काव्य-सवेदना की प्रक्रिया एव उपकरणों मे परिणत कर देती है। उनके लिए

सगर की समस्त वस्तुएँ भावना के ढाँचे में ढली हैं। यह आकाशीय व्यापारा को भी घरेलू वातावरण में सीधे-से उल्टे हृदय के निरट ले आती हैं। घूप का छोटा सा टुकड़ा भी तरह-तरह गाय हुए बच्चों की गरम राँग वातर उतारी हथेली धाम लेता है। आज के चौद्विध काव्य तथा अमृत रत्ना के युग में ऐसी मूतामून भावना गंधी शुद्ध कविता अत्यन्त दमन का नहीं मिलती है। प्रेम की समय अनुभूति तथा सौन्दर्य के पुलक स्पष्ट रा छूबर के बतमान यत्र-युग के कुरूप उपादाना को भी काव्य की गरिमा तथा गम्भीरता प्रदान कर देती हैं। यम ता इन सग्रह की 75 प्रतिशत पवित्रता उद्धृत करके योग्य हैं किन्तु मैं छोटे में अवतरणा को यहाँ देकर अपने कथा का समर्थन करूँगा। स्मृति की प्रगर अनुभूति का एक निम्न है—

मैं दिल के कानों में बठी हूँ
 तुम्हारी याद उग तरह आयी
 जैसे गीली लकड़ी में ग
 गाढा कड़ुवा घुआँ उठे

वप कायला को तरह बिगरे हुए
 कुछ युद्ध गय कुछ बुझन में रह गय।

दैनन्दिन के सजीव महत्धी के व्यापारा के माध्यम से कसी अवयवीय व्यथा को अभिव्यक्ति दी गयी है। रोजी शीपक कविता की कुछ पवित्रताएँ हैं—

चाँद की निमनी में ग
 सफेद गाँगा घुआँ उठना है —
 सपने जैसे कोई भट्टिया हैं
 हर भट्टी में आग झोकना हुआ
 मरा इशर मजदूरी करता है।
 मरा मिलना एमा होता है
 जैसे कोई हथेली पर
 एक बक्ल की रोजी रख दे।

युग के छोटे मोटे व्यापारा के भीतर में हृदय की कौसी टीस झलकती है। और भी देखिए—

रात कुडी में दावत दी
 सितारा के चावल फटक कर
 यह देग किसने चढा दी।

कसी घरेलू तथा साथ ही कसी नरीन जोर मौलिक कल्पना है। इसी प्रकार के हृदय के फूलके शब्दों में इस प्रणय व्यथा की चितेरी न अनन्व हृदयस्पर्शी चित्र अंकित किये हैं—

चाँद ने रात के बाला में
 जैसे फूल टाक दिया।

नीद के होठा में जैसे
 सपने की महक आती है।

आज तारो ने फिर कहा
उम्र के महल में अब भी
हुस्न के दीये जल रहे हैं
तू नहीं आया ।

अथवा

जिसने अँधेरे के अलावा कभी कुछ नहीं बना
वह मुहब्बत आज किरनों धुनकर दे गयी ।

ऐसी अनेक कवित्वमयी गमम्पशिनी पकितया इन कविताओं में बिखरी पड़ी हैं जो
या तो प्रेम व्यथा से कराहती हैं या भाव सौंदर्य से रोमांचित सी लगती हैं ।
कवयित्री के ही शब्दा में—

उम्र के बाग़ पर
तेरे इश्क ने अँगूठा लगाया
हिंसाब बौन चुकायेगा

अमृताजी की यथाथ-बोध से प्रेरित कविताएँ भी उनकी प्रणय गीतियों की तरह
ही सशक्त तथा हृदय का छूनेवाली होती हैं—

लाश को एक लाश की भूल होती है
लाश की कोख बाँझ नहीं होती ।
और मेरी लाश की छाती से
दूध की एव बूद टपक पड़ती है ।

अथवा

दुनिया को रोशनी से
सदिया शिक्का करती है
इस मुहब्बत के मौसम में
तुमने नफरत को कैसे बो दिया ।

अथवा

अनदाता ।
मेरी जवान और इतवार ?
यह कैसे हो सचता है
हा, प्यार
यह तेरे मतलब की सँ नहीं ।

अथवा

अब मैं शायद सारी उम्र
गिस्मो के कीचड़ में हाथ डाल
ढूँढ़ूँगी इमी इश्क को
वज्रित-अवजित महक को
ढूँढ़ूँगी रंगी गंध को ।

अथवा

अस्पताल के दरवाज़े पर
हूँ सच, ईमान और बदरें
जान बित्तने ही सफ़्त बीमार पड़े हैं ।

युग जीवन के यथार्थ का इससे सच्चा तथा ममव्यथापूण चित्रण और क्या हो सकता है। वास्तव में अमताजी की कविता के लिए भूमिका की आवश्यकता नहीं है। उनके काव्य चरण अनेक भावनाओं तथा यथाथ की भूमिकाएँ पार करते हुए अपनी ही अनुभूतिजनित अतिशयता, आवेग तथा गहराई में हृदय में स्वतः अंकित हो जाते हैं। वह कहती हैं—

मेरे इश्क के ज़रम
तरी याद ने सिये ये
आज मैंने टाके खोलकर
वह धागा तुझे लौटा दिया
मेरे इश्क की पाक बिताव
कितनी ददनाक है,
आज मैंने इतज़ार का सफा
इसमें फाड़ लिया।

प्रेम व्यथा की इतनी खुली, मार्मिक तथा सरल अभिव्यक्ति है कि अमताजी से उन्हीं के शब्दों में पूछने को जी करता है कि—

अपसरा जो अपसरा,
हूँस कौसा खेल है
कि इश्क जीत नहीं पाता।

इसमें सन्देह नहीं कि अमताजी की कविता के अनुवाद से हिन्दी काव्य भाव धनी, स्वप्न ससृष्ट तथा शिल्प समृद्ध बनेगा। इसमें आये हुए पंजाबी के अनेक सरल काव्यमय शब्द हिन्दी के शब्दचित्र भण्डार की पूर्ति करेंगे। निस्सन्देह इस हिन्दी अनुवाद से उनकी मौलिक पंजाबी भाषा की कृति में कहीं अधिक मिठास है। इन कविताओं में यह सहज ही प्रमाणित हो जाता है कि अमताजी का स्थान पंजाबी ही में नहीं समस्त भारतीय भाषाओं में भी प्रथम श्रेणी के योग्य है। इस संग्रह से हिन्दी के नये कवियों को विशेष रूप में प्रेरणा मिलेगी जो आज अपने हृदय की सहज भाव ग्राहिणा अमूल्य दृष्टि को गँवाकर वारी दौड़कता क नीरस नि सार मरु में दिग्भ्रान्त भटक रहे हैं। जिस गहरी भाव-सवेष्टता, सामाजिक यथाथ तथा युगमानव की व्यथा का सच्चा चित्रण अमताजी ने अपनी नारी हृदय की जादू तूली से इन कविताओं में किया है वे उनकी कृति को एक अत्यन्त उच्च तथा व्यापक स्तर पर उठा देती हैं। मैं इन कविताओं के आमुख के रूप में दो शब्द लिखकर चरिताथता का अनुभव करता हूँ।

क्रम

खण्ड—1

धूप का टुकड़ा	15
याद	17
रोज़ी	19
मैं	21
मुलाकात	23
दावत	23
आवाज़	25
तू नहीं आया	27
बातें	29
जाड़ा	31
सवेरा	33
आग की बात	35
निवाला	37
नागमणि	39
कम्पन	41
दावत	43
कुफ़ !	43
एक मुकाम	45
रोशनी	45
एक बात	47
खुशी!	49
साल मुबारक	51
माया	53

खण्ड—2

हादसा	
दूध की बूद	61
रात मेरी	61
परदेसी	63
दाग	69
अन्नदाता	69
एक गुनाहगार	71
इडीपस	75
लेंगडाता साया	77
एक नगर	79
एक शहर	81
तीसरी कसम	85
	91

खण्ड—3

वारिस शाह से	97
मजबूर	101
गध	103
27 मई, 1964	107
रोशनी की सूई	109
एक गीत	111
शतरज	115
दोस्तो !	119
एक क्षत	121

फेर तैनू याद कीता
अग नू घुम्मिआ असां
इश्क पियाला जहर दा
दक घुट्ट फिर मग्गिआ असां

धुप्प दा टोटा

मैनू उह बेला याद ए
जद इक् टोटा धुप्प दा
सूरज दी उगल पकड के
हेरे दा मेला बेखदा
भीडा दे विच्च गुआचिआ

सोचदी हा—सहिम दा ते—
सुज दा वी साक हुदा ए
मै जु इसदी वुछ नही
पर इस गुआचे बाल ने
इक् हत्य मेरा फड लिआ

तू किते लभदा नही
हत्य नू छोहदा पिआ
निक्का ते तत्ता इक् साह
ना हत्य दे नाल परचदा
ना हत्य दा खादा बसाह

हेरा किते मुक्कदा नही
मेले दे रीले विच्च बी
है इक् आलम चुप्प दा
ते याद तेरी इस तरह
जिओं इक् टोटा धुप्प दा

धूप का टुकड़ा

मुझे वह समय याद है
जब धूप का एक टुकड़ा
सूरज की जंगली घामवर
अंधेरे का मेला देखता
उस भीड़ में खो गया

सोचती हूँ सहम का
और सूनेपन का एक नाता है
मैं इसकी कुछ नहीं समती
पर हम सोये बच्चे ने
मेरा हाथ धाम लिया

तुम वही नहीं मिलते
हाथ को छू रहा है—
एक नन्हा सा गम साँस
न हाथ से बहलता है,
न हाथ को छोड़ता है

अंधेरे का कोई पार नहीं
मेले के शोर में भी
एक खामोशी का आलम है
और तुम्हारी याद इस तरह
जैसे धूप का एक टुकड़ा

याद

सूरज ने कुझ घाबर के अज
चानण दी इक् बारी खोहली
बहल दी इक् बारी भीडी
उतर गिआ हेरे दी पौडी

अबर दे भरवट्टिआ उत्ते
पता नही क्या मुढका आइआ
तारे, सारे बीडे खोहले
गला चन दा कुडता साहिआ

बैठी हा में दिल दी गुठठे
याद तेरी अज ईक्ण आई
जीक्ण गितली लक्कड विच्चा
गाढा कौडा घृआ उटठे

नाल सक्डे सोचा आईआ,
जीक्ण सुक्की लक्कड भरदी
लाल किरमची अग्ग दे हुउके
दोवें लक्कडा हुणे बुझाईआ

बरहे, जिसतरां कोले खिडे
कुझ बुझ्से, कुझ बुझ्जाणो रह गए
हत्थ समे दा साभण लग्गा
पोट्या उत्ते छाले पै गए

व्दक् तेरे दे हत्था छुट्टी
जिद बाह्जनी टुट्ट गई है
तवारीख अज चौके विच्चो
भुक्खी भाणी उट्ट गई है

याद

आज सूरज ने कुछ धबरा कर
रौशनी की एक खिडकी खोली
बादल की एक खिडकी बाद की
और अँधेरे की सीढियाँ उतर गया

आसमान की भवो पर
जाने क्या पतीना आ गया
सिनारो वे बटन खोलकर
उराने चाँद का कुर्न उतार दिया

मैं दिल के एक कोने में बठी हूँ
तुम्हारी याद इस तरह आयी
जैसे गीली लकड़ी में मे
गाढा बड्वा धुआ उठे

साथ हजारों सपान आय
जैसे मूखी लकड़ी
सुख आग की आह भरे
दोना लकडियाँ अभी बुझायी हैं

वप कोयलो की तरह बिखरे हुए
कुछ बुझ गये, कुछ बुझने से रह गय
वकन का हाथ जब समेटने लगा
पोरा पर छाले पड गये

तेरे इसक के हाथ से छूट गयी
और क्किदगी की हँडिया टूट गयी
इतिहास का मेहमान
चौके से भूखा उठ गया

रोजी

नीले अबर दी इय गुटठे

रात मिल्ल दा घुग्गू वज्जे
चन्द्रमा दी चिमनी विन्वो
चिट्टा गाढा धूआ उटठे

सुपने जीवण कई भट्टीआ
हर इक भट्टी अग्न झावदा
मेरा इक्क मजूरी करदा

मेल तेरा कुझ ईवण मिलदा
जीकण कोई तलीआ उते
इक्क डग दी रोजी घरदा

जिहडी सखणी हाडी भरदा
रिन्ह पका के अन परस के
उहीओ हाडी मूधी घरदा

रहिंदी अग्न 'ते हत्य सेकदा
घडीए मासे निस्सल हूदा
शुकर शुकर अल्ला दा करदा

रात मिल्ल दा घुग्गू वज्जे
चन्द्रमा दी चिमनी विन्वा
धूआ निकले इसे आस ते

जोई कमाण्णा सोई खाणा
ना कोई किणका कल दा बचिया
ना कोई भोरा भलक वासते

रोजी

नीले आसमान के कोने में

रात मिल का साइरन बोलता है
चाँद की चिमनी में से
सफेद गाढा धुआँ उठता है

सपन जैसे कई भट्टियाँ हैं
हर भट्टी में आग जोकता हुआ
मेरा इशक मजदूरी करना है

तेरा मिलना ऐसे होता है
जैसे कोई हथेली पर
एक वकन की रोजी रख दे

•

जो खाली हँडिया भरनी है
राँध-पका कर अन्न परस कर
वही हाडी उलटी रखता है

बची आँच पर हाथ सेंकता है
घडी पहर को मुस्ता लेता है
और खुदा का शुक्र मनाता है

रात मिल का साइरन बोलता है
चाद की चिमनी में से
धुआँ इस उम्मीद पर निकलता है

जो कमाना है वही खाना है
न कोई टुकड़ा कल का बचा है
न कोई टुकड़ा कल के लिए है

मैं

अब र जदो वी रात दा
ते चानण दा रिशता गढदे
तारे बघाईआ बढदे
कयो सोचदी हौं मैं जे बदी
मैं, जु तेरी कुझ नही लगदी

जिस रात दे होठा ने कदे
सुपने दा मत्था चुम्मिआ
सोचा दे पैरी छणबदी
इक झाजर जही उस रात दी

इक बिजली जदो असमान 'त
बहला दे वरके फोलदी
मेरी कहाणी भटकदी
आद डूडदी, अत डूडदी

है खडक पदी कोई तेर
दिल दी इक बारी जदो
मैं सोचदी हौं केहो जही
जुरबत है मेर सवाल दी ।

तलीआं दे उते इक दी
मंहदी दा कुझ दावा नही
हिजर दा इक रग है
ते इक खुशबू है तेरे जिकर दी

मैं, जु तेरी कुझ नही लगदी

मैं

आसमान जब भी रात का
और रीशनी का रिश्ता जोड़ते हैं
मित्तारे मुबारकवाद देते हैं
मैं सोचती हूँ, अगर कहीं
मैं, जो तेरी कुछ नहीं लगती

जिस रात वे हाँठे ने कभी
सपने का माथा चूमा था
सोच के पैरा में उस रात से
इक पायल सी बज रही है

इक बिजली जब आसमान में
बादलो के बक उलटती है
मेरी कहानी भटकती है
आदि ढूँढती है, अंत ढूँढती है

तरे दिल की एक खिडकी
जब कहीं बज उठती है
सोचती हूँ, मेरे सवाल की
यह कैसी जुर्रत है !

हथेलियों पर इश्क की
मेहदी का कोई दावा नहीं
हिप्प का एक रंग है
और तेरे जिक्र की एक खुशबू

मैं, जो तेरी कुछ नहीं लगती

मुलाकात

मेरा शहर जदो तू छोहिया
अबर आखे मुट्टा भर के
अज मैं तारे वारा

दिल दे पत्तण मेला जुडिआ
राता जिआ रेशम दीआ परीआ
आईआ बाह कतारा

तेरा गीत जदा मैं छोहिया
कागज उते उँघड आईआ
केमर दीआ लकीरा

सूरज ने अज महदी धोली
तलीआ उते रंगीआ गईआ
अज दोवें तकदीरा

दावत

रात कुडी ने दावत दिती,
तारे जीकण चौल छडीदे
बिसने देगा चाढीआ

बिसने आदी चन सुराही
चानण घुट्टु शराब दा
ते अबर अक्लौं गाढीआ

घरती दा अज दिल पिआ धडके
मैं सुणिआ अज टाहणा द घर
फुल्ल प्राहुणे आए वे

मुलाकात

मेरे शहर ने जब तेरे कदम छुए
सितारों की मुट्टियाँ भरकर
आसमान ने निछावर कर दी

दिल के घाट पर मेला जुड़ा
ज्या रातों रेशम की परियाँ
पाँत बाँधकर आयी

जब मैं तेरा गीत लिखने लगी
कागज के ऊपर उभर आयी
केसर की लकीरों

सूरज ने आज मेहदी धोली,
हथेलियों पर रँग गयी
हमारी दोनो तकदीरों

दावत

रात-बुडी ने दावत दी
सितारों के चावल फटक पर
यह देग किसने खड़ा दी

चाँद की मुराही कौन लाया
चाँदनी की शराब पीकर
आकाश की आँसू गहरा गयी

धरती का दिल घटक रहा है
मुना है आज टहनियों के घर
फूल मेहमान हुए हैं

इस दे अगगा की बुझ लिगिआ
घुण एहां तबदीरा कोला
बेहडा पुच्छण जाए थ

उमरा दे इस बागज उत्ते
इदक तेरे अंगुठा साइआ
बीण हिसाव चुकाएगा

विरामत ने इक नगमा लिगिआ
बहिदे १ कोई अज रात नूँ
ओहीओ नगमा गाएगा

बलप बूछ दी छाँवें बहि व
कामधेन दा दुध परामिआ
किसने भरीआ दोहणोआ

बिहडा सुणै हवा द हउवे
चन नी जिंदे चलीए—सानू
सदण आईआ होणीआ

आवाज

बरिहा दे पडे चीर के
तेरी आवाज आई है
सस्ती दे पैरा नू जिवें
किसे ने मरहम लाई है

अज किते दे मोढिआ ता
इक हुमा लघिआ जिवें
चन ने अज रात दे
बाला च फुल्ल टुगिआ जिवें

आगे क्या लिखा है
अब इन तबदीरो से
कौन पूछने जाये

उम्र के कागज पर
तेरे इश्व ने अँगूठा लगाया
हिसाब कौन चुकाएगा ।

किसमत ने इक नगमा लिखा है
बहते हैं कोई आज रात
वही नगमा गायेगा

बल्प वृक्ष की छाँव में बैठकर
कामधेनु के छलके दूध से
किसने आज तक दोहनी भरी ।

हवा की आहें कौन सुने,
चलूँ
तबदीर बुलाने आयी है

आवाज

बरसो की राहें चीरकर
तेरी आवाज आयी है
सम्सी के पैरो को जीसे
किसी ने भरहम लगायी है

आज किसी के सर से
जैसे हुमा गुजर गया
घाँद ने रात के बालो में
जसे फूल टाँक दिया

नीदर दे होठा चो जिवें
सुपने दी महिब आउंदी है
पहिली बिरन जिओ रात दे
मत्थे नू सगण लाउंदी है

हर इक हरफ दे बदन 'चा
तेरी महिब अउदी रही
मुहब्बत दे पहिले गीत दी
पहिली सतर गउंदी रही

हसरत दे घागे जोड के
सालू असी उणदे रहे
बिरहा दी हिचकी बिच्च वी
शहनाई नू सुणदे रहे

तू नही आया

चेतर ने पासा मोडिआ
रगा दे मेले वास्ते
फुल्ला ने रेशम जोडिया
तू नही आया

होईआ दुपहिरा लम्बीआ
दाखा नू लाली छोह गयी
दाती ने कणका चुम्मीआ
तू नही आया

बद्दला दी दुनीआ छा गयी
घरती ने बुक्का जोड के
अम्बर दी रहमत पी लई
तू नही आया

नींद के हाथों से जैसे
सपने की महक आती है
पहली किरण जैसे रात की
मार्ग में सिद्धर भरती है

हर इक हरफ के बदन से
तेरी महक आती रही
मुहब्बत के पहले गीत की
पहली सतर गाती रही

हसरत के धागे जोड़कर
हम ओढ़नी बुनते रहे
बिरहा की हिचकी में भी हम
गहनाई को सुनते रहे

तू नहीं आया

चैत ने बरबट ली,
रगा के मेले के लिए
फूला ने रेसम बटोरा
तू नहीं आया

दोपहरें लम्बी हो गयी
दामो को लाली छू गयी
दरतीनी ने गेहूँ की बालियाँ घूम ली
तू नहीं आया

बादलों की दुनिया छा गयी
परती ने दोना हाथ बढ़ाकर
आसमान की रहमत भी ली
तू नहीं आया

रकसा ने जादू कर लिया
जगल नू छोहदी पीण दे
होठा 'च राहद भर गिआ
तू नही आया

रता ने जादू छोहणीआ
चाना ने पाईआ आण वे
राता दे मत्थे दौणीआ
तू नही आया

अज फेर तारे कह गये
उमरा दे महिली अजे वी
हसना दे दीवे बल रहे
तू नही आया

किरणा दा झुरमट आसदा
राता दी गूडी नौद चो
हाले वी चानण जागदा
तू नही आया

गल्ला

आ सज्जण अज गल्ला करीए

तेरे दिल दे बागा अदर
हरी चाह दी पत्ती वागू
जिहडी गल्ल जदा की उगी
उसे गल्ल नू तोड लिया तू

हर इक कूली गल्ल छुपायी
हर इक पत्ती सुक्कणे पायी

मिट्टी दे इस चुरहे अदर
किते अग नू पील लवागे
इव दो पूवा मार लवागे
मुज्झी लनवड बाल लवागे

मिट्टी दे इस चुरहे अदर
सब इरव दा बोल पवेगा
भेरे जिसम ताबीए अदर
दिल दा पाणी खील पवेगा

आ सज्जण अज खोल्लह पोटली

हरी चाह दी पत्ती वागू
उहीओ तोड गवाईआ गल्ला
उहीओ साभ सुकाईआ गल्ला
इस पाणी बिच पा के वेखी
इस दा रग बटा के वेखी

तत्ता घुट्ट इव तू बी पीवी
तत्ता छुट्ट इक मै बी पीवा
उमर-टूनाला असा लघाइआ
उमर सिआला लघदा नहीऊँ

आ सज्जण अज गल्ला करीए

11

सिआल

जिन्द मेरी ठुरकदी
होठ नीले प गए
ते आत्मा दे पैर बल्ला
बम्यणी चढदी पई

मिट्टी के इस घूँट में
हम कोई चिनगारी बूँद लेंगे
एक दो घूँटों में मार लेंगे
सुगन्धी लकड़ी फिर में बाल लेंगे

मिट्टी के इस घूँट में
दस्त की भाँप बोन उठेगी
मेरे त्रिस्त की हँसिया में
दिन का पानी सोल उठेगा

भा गाजन भाज सोल पोटना

हरी पाय की पत्तों की तरह
वही तोड़-नोबाई बातें
वही गम्भान सुगन्धी बातें
दम पानी में डालकर देग
दगना रंग बदलकर देग

गम घूँट दक तुम भी पीना
गम घूँट दक मैं भी पी लूँ
उम्र का प्रीप्स हमन बिना दिया
उम्र का निशिर नहीं बीतता

भा साजन भाज बातें कर लें

जाडा

मेरी जान, ठिठुर रही है
हॉट नीले पट गये हैं
आत्मा के पैर की तरफ से
कपड़ों की छूट रही है

धरिहा दे बहल गरजदे
इस उमर दे असमान त
वेहडे दे विच्च पंदे पए
बानून गोहडे बरफ दे

गलीआ दे चिक्कड लग्घ के
जे अज तू आवें बिते
में पैर तेरे धो दिया

बुत्त तेरा सूरजी
कम्बल दी कती चुक्क के
में हह्हा दा ठार भन ला

इक् कौली धुप्प दी
में डीक ला के पी लवा
ते इक् टोटा धुप्प दा
में कुक्ख दे विच पा लवा

ते फेर खीर उमर दा
इह सिआल गुजर जाएगा

सवेर

डाढी उच्ची कघ बस्त दी
बडी उचावी भीडी सौडी
रात जिवें लक्कड दी पौडी

लिफदे जादे गोल तिलकवें
हादमिआ दे सैआ डण्डे
जिस डण्डे ते पेर टिकादी
उस तो अगला धुट्टे के फउदी
जिद-सवेर उताह नू चढदी

दम उम्र के आगगाँव पर
बरगा के बादल गरज रहै है
कानून जैत बक्र व गाँव
मेरे आँगा म गिर रहै है

बीसठ भरी गनियाँ पार करके
जो तुम वहीँ आ जाओ
मैं तुम्हारे पैर धो दूँ

तुम्हारा गूरज का सा चुन
बम्बल का निगारा उठाकर
मैं हाथ-पाँव सेंक लूँ

एक बटोरा धूप का
मैं एक साँत म पों लूँ
और एक टुकड़ा धूप का
मैं अपनी कोत म रग लूँ

और दम गहूँ मापद
जम जम का जाटा बीन जाय

सवेरा

समय की दीवार बहुत ऊँची
सम्बी तंग और अधियारी
रात जैसे बाँठ की सीढ़ी

मचलती गोल पिगलई
हादगा की फई सीढ़ियाँ
जिग सीढ़ी पर पाँव टिकाती
उसका अगली सीढ़ी को घामती
एक मुवह ऊपर को पढ़ती

अबर आशक ऊधी पायी
बैठा धुद दा हुक्का पीवे
सूरज दा इक कोला लैके
लीका पावे फेर बुझावे

फिर पूरब दी मजी झाडे
वहल वट्ट कडड के सारे
नीली चादर करे सवाहरी
गिणे गीटीआ बारो वारी

कदो किसे दा हत्य छुटकिया
कदो किसे दा पैर थिडकिया
गल्ल, जिसतरा मूहा गुगी
गल्ल, जिसतरा बनो बोली

पूरब दी अज मजी खाली
कोई सवेर बहिण ना आयी
अबर बीरा डूड रिहा है
घरती दी हर खुन्दर खायी

अगग दी बात

अगग दी इह बात है
तूह इह बात पाई सी
ओही सिगरट जिन्द दी
जो तू कदे मुलगाई सी

चिणग तेरी देण सी
इह दिल सदा धुखदा रिहा
बनत बानी पवड के
सेखा कोई लिखदा रिहा

अम्बर-आगिज ओपा बैठा
आज गुन्ना का हूँवरा पीग
गुरब का लग बोसना मकर
सीरों सीध और मुसाय

फिर पूरब की शाट शाडना
सादम जैग कई गनषटें
पीपी पादर शाट बिछाता
और मुबद की रात लेगता

हाथ किरी का कब रग
पाँव किरी का कब रिगता
बात जिन तरह बिनकुन मूर्गी
बात जिन तरह बिनकुन बहरी

पूरब का मन्गिया मानी है
बाई गुबह आज रही आया
अम्बर घोरा झूँक रहा है
घरनी की हर मन्ग मारी

आग की बात

यह भाग की बात है
तूने यह बात सुनायी थी
यह जिन्दगी की यही सिगरेट है
जो तूने कभी सुनगायी थी

- ✓ चिगारी तूने दी थी
यह दिन सग जलता रहा
बचन बलम पन डवर
कोई हिसाब लिखता रहा

चौदा कु मिट छोए ने
आ वेख बहीआ इहणीआ
चौदा कु साल होए ने
आ वेख बलमा कहिदीआ

एस मेरे जिसम अंदर
साह तेरा चलदा रिहा
घरती गवाही दएगी
धूआं निकलदा रिहा

जिन्द मिगरट बल गयी
महिब मेरे इस्क दी
बुझ तेरे साहा दे विच
बुझ पीण दे विच रल गयी

वेख टोटा आखरी
उंगला दे विचो छडड दे
सेक मेरे इस्क दा
पोटा ना तेरा छोह लव

जिन्द दा हुण गम नही
इस अगग नू सम्भाल लै
खैर मंगा हत्य दी
हुण होर सिगरट बाल लै

बुरकी

जिन्द-बुडी ने कलह रात नू
सुपने दी इक बुरकी भनी
पता नही इह खबर किसतरा
पहुँच गयी अवर दे कनी

धीरे धीरे टूट है
दगका साया देगो
धीरे धीरे टूट है
दग कातम मे पूछो

मरे दम त्रिम म
तेरा मांग बनया रहा
घरलो गयाही दगो
मुझी निबन्ता रहा

उम्र की गिगरेट जल गया
मरे दम की महक
कुछ करा मांगो म
कुछ हवा म भित्त गयो

देगो यह आखिरी टुकड़ा है
उँगलियो म म छोड दो
कहीं मर दमक की आव
सुझारी उँगमी को न छू से

खिन्गी का अब गम नहीं
दग भाग को गँभाम मे
तेरे हाथ की मँद माँगती है
अब और सिगरेट जलता से

निवाला

जिन्द कुडी ने बल रात
सपने का दूब निवाला लोहा
जागे यह सबर किस तरह
आगमान के मानो तक जा पहुँची

बट्टिया खम्मा खम्बर सुणी
ते लम्बीआ चुज्जा खबर सुणी
ते खुट्टिया मूहा खबर सुणी
ते तिलिया नहुँआं खबर सुणी

इस बुरकी दा नगा पिण्डा
इस दुशबू दा वज्जण पाटा
ना कोई मिलिआ मन दा ओहला
ना कोई तन दा क्षुन्मलमाटा

इक झपटटे बुरकी खुस्सी
दोवें हत्य बलू घर घत्ते,
इक झपटटे गल्ह क्षरीटी
नहुँदर वज्जी मूह द उत्ते

मूह दे विच बुरकी दी धावें
रहि गईआ बुरकी दीआ गल्ला
अबर द विच उड्डण पईआ
राता जिवें कालीआ इल्ला

नाग मणी

डाढा घणा अकन दा जगल
इलम जिवें इक हल चनण दा
मन दा सप्य कौडीआ वाला
मत्ये दे विच्च मणी चमकदी
पौणा द विच्च फण फँलाया

पोले पैर सपाघा आया
होठा उत्ते बीन इस्क दी
हत्य आस दी अही पच्छी
कच्चा दुँघ मुहब्बत वाला
मन दा सप्य पटारी पाया

बड़े पत्ता ने घर खबर सुनी
सम्झी थोपों ने यह खबर सुनी
तब खबारा ने घर खबर सुनी
तीने तागूतों ने यह खबर सुनी

एक गिबाने का बदन गया
गुससु की ओड़नी पट्टी हुई
मन की ओट गरी मिमी
तन की ओट रही मिमी

एक हापट्ट में गिबाना छिन गया
दोना हाप खम्भी हा गप
गाया पर गरणों आया
होंडा पर नागूता ने निमान

मुँह में गिबान की जगह
गिबाने की बाँते रू गयो
और भागमात में रातों
बानी चीला की गरह उड़ने सगों

नागमणि

गहरा घना अरल का जगल
इन्म बूरा घटन का जैसे
मन का साँप कीटियोवाला
माये में एक मणि कमवती
और हूया में पण पैसाया

धीमे पाँव सपेरा आया
हाठो पर एक बीन इरक की
हाथ आग की बाद पिटारी
बच्चा दूध मुहख्यनवाला
मन का साँप पिटारी पाया

बैठ सपैला इक चुराहे
वीन बजावे सप्प खिडाव
बदे सप्प नू गल विच पाये
हस्से राग अते बिख रोवे
सारा लोक तमाशे आया

कम्बणी

घरती ने अज बरत खोलहणा
दिल दी थाली कौण परोसे
गीता वाले चील छडदिआ
कम्बण लग्गी उबलली

होणी ने अज रू पिजाडआ
जिओ जिओ चरत्वा घूकर देवे
कबी जावे जिद जुलाही
कबी जावे तक्कली

अम्बर दी अज पौडी कम्बे
तारे उतरण वाहो दाही
किहूडे मन दे महला अदर
पई अचानक भउजली

किम पापी ने तीर चलाया
इदक दा जगल सहम गिआ है
डरदी कम्बदी भज्ज गयी है
यादा दी मिरगावली

देह मपरा एक चौराह
बोन बजाय गाँव गिराव
बभी गाँव को मन लगाये
होम राग और बिष रोव
गारा सोच ठमारे आया

कम्पन

घरती आज राग लोलेगी
लिन की धारती बंगे परमू
गीता का यह धात बूटते
बाँप रही है ओगगी

बिरमा ने है रई पिजाई
ज्या-ज्यों धरती गूँज गुताय
बाँप रही है प्राण जुताहित
बाँप रही है तबला

आज गगा की भीड़ी बाँप
तारे उतरें एक-एक कर
मन के बिन महला म राहगा
मची हुई है शलबली

बिग पापी ने तीर धलाया
दरक का जगल महम गया है
हरते हरते भाग गयी है
मादों की मिरगावली

दावत

अकल इलम ने मिट्टी गोई
कलम मेरी घुमिभारी होई
गीत जिसतरा सागर बूजे
हुणे हुणे इस चैंक तो लाहे

दिल दी भट्ठी बालण पाया
दोही हत्थी उमर खरच के
कडढी असा शराब इश्क दी
महिफल दे विच्च लै के आये

सदीआ ने अज हउका भरिआ
किहा सराप दित्तोई सानू
जिद कुडी अज विट्टर बँठी
किसे घुट्ट नू मूह ना लाये

इस दावत नू की कुझ कहीए
इश्क शराब इसतरा जाये
हर इक जाम दीआ अक्खा विच्च
जीकण गट गट अयरु आये

कुफर

अज असाँ इक दुनीआँ बेची
ते इक दीन बिहाज लिआये
गल्ल कुफर दी कीती

सुपने दा इक धान उणाया
गज बु कपढा पाढ लिआ, ते
उमर दी चोली सीती

दावत

अबत इन्म की माटी भीमी
बनम मेरी बुम्हारिा हुई
गोन जिन तग्ह गागर बूढे
अभी-अभी पाव न। ताव

दिन की भट्ठी आग जनायी
दोती हाथा उमर गध कर
एक मराय ह्दहार आतगा
महशिन म हम रोकर आय

मदिया न तियाम निया इत
नैगा साथ लिया है, हुमवा
जीवन-बन्ग बूठ गयी है
एक पूंटे न होंठ सुभाये

दम दावत का क्या सजा दें
दरक-गाराब दम तग्ह मगती
हर दक जाम की आता म हो
जैग कुछ आंगू भर आय

कुफ़

आज हमने एक दुनिया बेची
और एक दीन खरीद लिया
हमने कुफ़ की बात की

सपना का एक घान घुना था
एक गज बपहा फाड लिया
और उम्र की बोली गी ली

अज असा अवर दे घडिआ
चहल दी इय चय्यणी लाही
धुट्ट चानणी पीती

गीता नाल चुवा जावागे
इह जु असा मीत दे कोला
घढी हुधारी लीती

इक मुकाम

कलम ने अज तोडिआ गीता दा काफीआ
इक मेरा पहुँचिआ इह वेहडे मुकाम ते ।

वेख नजरा वालिआ कि वहनी आ साहमणे
तली विचा हिजर दी छिलतर नू कडढ दे ।

जिस हनेरे तो सिवाये होर कृप ना कतिआ
उह मुहब्बत दे गयी किरणा अटेर के

उट्ठ आपणे घडे चो पाणी दा कौल देह
धो लवागी बैठ के राहवा दे हादस

रोशनी

हिजर दी इस रात बिच्च
कुछ रोशनी आदी पई
फेर बत्ती याद दी
कुछ होर उच्ची हो गई ।

आज हमने आसमान के घड़े से
बादल का ढक्कन उतारा
और एक घूंट चाँदनी पी ली

यह जो एक घड़ी हमने
मीन से उधार ली है
गीतों से इसका दाम चुका देंगे

एक मुकाम

कलम ने आज गीता का काफिया तोड़ दिया
मेरा इत्त यह किस मुकाम पर आ गया है

देख नज़रवाले, तेरे सामने बैठी हूँ
मेरे हाथ स हिन्द का बाँटा निवाल दे

जिसने अँधेरे के अलावा कभी कुछ नहीं चुना,
वह मुहब्बत आज किरनों बुनकर दे गयी

उठो ! अपने घड़े से पानी का एक बटोरा दो
राह के हादसे में इस पानी से धो लूंगी

रोशनी

हिन्द की इस रात में
कुछ रोशनी-सी आ रही है
शायद याद की बत्ती
कुछ और ऊँची हो गयी है

इव हादसा, इव जलम
ते इव चीस दिल दे कोल सी
रात नू इह तारिआ दी
रकम जरवा दे गयी

नजर दे असमान तो
है टुर गया सूरज मिते
चन विच पर ओस दी
खुशबू अजे औदी पई

रल गई सी एम विच
इव बूद तेरे इश्क दी
इस लई में उमर दी
सारी कुडित्तण पी लई

इक गल्ल

मुच्चा दुड मुहब्बत मेरी
चिट्टे चावल वरिहा वाले
माजी धोती दिल दी हाडी
दुनीआ जीवण गितली लकड
सारी वस्त घ्वाख गयी है

रात जिवें पित्तल दी कौली
चिट्टे चन दी कली लहि गई
अज कलपना कसर गई है
सुपना जीवण कसर जाए
नीदर जिवें बुडाहद गई है

एक हादसा, एक जरम
एक टीस दिल के पास थी
सितारों की रकम ने
रात को इसे जरम दे दी

नजर के आगमान से
सूरज वही दूर चला गया
पर अब भी चाँद ने
उमकी सुश्रू आ रही है

तेरे इशक की एक बूँद
इसमें मिल गयी थी
इसलिए मैंने उम्र की
सारी बढवाहट पी ली

एक बात

सुच्चे दूध जैसी मेरी मुहब्बत
चिट्टे चावल बरसाने
माँजी घुली दिल की हाँडी
दुनिया जैमे गीली लवड़ी
सारी वस्तु घुमाँल गई है

रात जैसे पीतल की कटोरी है
चाँद की सफेद कलई उतर गयी
बत्पना पितरा गयी है
सपना बसरा गया है
और सारी नीद बढवा गयी है

जिद-नुडी दे अग मोवले
यादा जिवें सौटीआ छापा
उगला दे विच चीपा परईआ
समिआ दे मुनियारे बोला
रेती जिवें सडाच गई है

ठरदा जाए इदन दा पिडा
गीत दा झग्गा कीकण सीवां
उधड गया खिआल तरोपा
कलम-मूर्ई दा नक्वा टुट्टा
सारी गल्ल गुआच गयी है

खुशी

दूरा विघरा बाज सुणीवी
'बाज जिसतरा तेरी होवे
काना ने इक हऊका भरिआ
कम्यण लग्गी जिन्द सिआणी

सुशा अजाणी हत्य छुडा के
दोवें निक्कीआ बाहवा अडडी
ईकण दौडी, जीकण कोई
बालही दौडे परो बाहणी

पहिला कडा सस्कार दा
दूजा कडा लाव लाज दा
तीजा कडा धन दौलत दा
खतरे जीवण कई छिलतरा

तलीआ विचो कडे कडदी
पोटे घुटदी लहू पूअदी

जिंदगी के हाथ में
यादें जैसे खोबरी अँगूठी
उंगली में चीहूँ पट गयी
समय के गुनार से
रेती जैसे री गयी है

इश्क का बदन ठिठुर रहा है
गीत का बुरता बँग सौंके
रायाल का धागा उत्तझ गया है
बलम की मूर्ई टूट गयी है
और सारी बात री गयी है

खुशी

दूर वही स आवाज आयी
आवाज जा तेरी हो
बाना ने गहरी राँम ली
जीवन-वाला काँप उठी

मामूम खुशी हाथ छुडाकर
दोनो नही बाहें फँलाकर
एक बालिबा की तरह
नगे पाँव भाग उठी

पहला काँटा सस्कार का
दूसरा काँटा लोक-लज्जा का
तीसरा काँटा धन दौलत का
खतरे जैसे कितने काँटे

तलवों स काँटे निकालती
पोर दवाती लहू पोछती

मीला मीला पैर सगादी
अप्पट पहुँची खुशी निमाणी

अगला पैर अगाह नू जाव
पिछला पैर पिछाह नू आवे
'बाज जिसतरा असला तेरी
नजर जिसतरा बही बेगानी

दोचित्ती दा तिसा मन्डा
बटही ने विच ईवण खुम्भा
अबल इलम दा नहूँ हारिआ
खुम्भ गया है किरया ताणी

साग पैर मुज्जदा जावे
बहिर जिहा फँलदा जावे
हक्की बक्की मुज्ज बँठी
गोण लग पई खुशी अज्जाणी

साल मुवारक !

जिवें सोच दी कधी विचचो
टुट्ट गया इक ददा
जिवें समझ द झगगे उत्ते
लँग गयी इक खुघी
जिवें सिदक दी अख विच अज
चुभ गया इक तीला
नीदर ने जिआ उगला दे विच
सुपने दा इक कोला फडिआ
नवा साल अज ईकण चडिआ

मीलो बोगा लेंगटानी हुई
मासूम गुनी यहाँ आ पहुँची

अगला पाँव आग को बड़े
पिछला पाँव पीछे को मुड़े
आवाज जैसा बिलकुल तेरी
नजर जैसा त्रिलकुल बंगानी

असमजस का तीरा काँटा
एही में इस तरह चुभ गया
अबल इनमें वह नामून हार गए
जाने काँटा वहाँ तक उतर गया

सारा पाँव सूज गया है
जहर-सा पैस रहा है
हैरान परेगान जमीन पर बैठी
मासूम गुनी रो उठी है

साल मुबारक

जैसा सोच को कधी में स
एक दवा टूट गया
जैसा समझ के कुत्ते का
एक चीखड़ा उड़ गया
जैसा सिद्ध को आँखा में
एक तिनका चुभ गया
नींद ने जैसे अपने हाथों में
सपने का जलता कोयला पकड़ लिया
नया साल कुछ ऐसे आया

जीवण दिल दी पक्का विच्चा
 बुझ गया इव अकएर
 जिआ विगवाग दे मागज उते
 इल्ह गई अज सिआही
 जिवेँ सम दे होटा विचा
 निबल गया इव हऊगा
 आदम जात दीआ अस्सा विच
 जीवण कोई अघर अटिआ
 नवा साल अज ईकण चढ़िआ

जिवेँ इशक दी जीभ दे उते
 उठ पिआ इव छाला
 गभिअता दीआ बाहवा विचा
 भज्जगयी इव चूडी
 तवारीख दी मुदरी विच्चा
 डिग्ग पिआ इक थेवा
 घरती न जिऊ अवर दा इव
 घडा उदास जिहा खत पढ़िआ
 नवा साल अज ईकण चढ़िआ

माया

प्रसिद्ध बितरखार विनसेंट वागगाग दी कलपित प्रमिका माया नू ।

परीए नी परीए ।
 हूरा शाहजादीए ।
 गोरीए विनसेट दीए ।
 सच किओ बणदी नही ?

हुसन काहदा । इरक काहदा ।
 तू कही अभिसारिका ।

जैसे दिल के पिचरे से
 एक अक्षर घुस गया
 जैसे विश्वास के नागज पर
 सियाही गिर गयी
 जैसे समय के होठों से
 एक गहरी साँस निकल गयी
 और आदमजात की आँसों में
 जैसे एक आँसू भर आया
 नया साल कुछ एम आया

जैसे इश्क की खदान पर
 एक छाला उठ आया
 सम्मता की बाँहा में स
 एक खूँटी टूट गई
 इतिहास की अँगूठी में स
 एक नीलम गिर गया
 और जैसे धरती ने आसमान का
 एक बड़ा उदास-सा छत पड़ा
 नया साल कुछ ऐसे आया

माया

प्रसिद्ध चित्रकार बिसेण्ट वानगग की कल्पित प्रेमिका माया से ।

अप्सरा ओ अप्सरा !
 शहजादी ओ शहजादी !
 बिसेण्ट की गोरी !
 तुम सच क्या नहीं बनती ?

यह कैसा हुस्न ! और कैसा इश्क !
 और तू कैसी अभिसारिका !

अपणे वित्ते महिबूब दी
भावाज तू सुणदी नही

दिल द अदर चिणग पा वे
साह जदो लग कोई
सुलगदे अगिआर कितने
तू कदे गिणदी नही

काहदा हुनर । काहदी कला ।
तरना है इह इक जीऊण दा
सागर तलईअल दा कदे
तू कदे मिणदी नही

परीए नी परीए ।
हूरा शाहजादीए ।
खिआल तेरा पार ना—
उरवार देंदा है

रोज सूरज डूढदा है
मूह किते दिसदा नही
मूह तेरा जो रात नू
इकरार देंदा है

तडप किसनू आख दे ने
तू नही इह जाणदी
कयो किते तो जिदगी
कोई वार देंदा है ।

दोवें जहान आपणे
लादा है कोई खेड ते
हसदा है नामुराद
ते फिर हार देंदा है ।

परीए नी परीए ।
हूरा शाहजादीए ।



लवला तलबाल इसतरा
औणगे टुर जाणगे

अरगवानी ज़हिर तेरा
रोज कोई पी लवेगा
नकदा तेरे रोज जादू
इसतरा कर जाणगे

हस्सेगी तेरी कलपना
तडपेगा कोई रात भर
साला दे साल इसतरा
इसतरा खुर जाणगे

हुनर मुक्खा रोटी ए !
प्यार मुक्खा गोरी ए !
कितने कु तेर वानगाग
इसतरा भर जाणगे !

परीए नी परीए !
हरा शाहजादीए !
हुसन काहदी खेड है
इस्क जद पुगदे नहीं

रात है काली बडी
उमरा किसे ने बालीआ
चन सूरज कहे दीवे
अजे वी जगदे नहीं

बुत्त तेरा सोहणीए !
ते इक सिट्टा कणक दा
काहदीआ इह धरतीआ
अजे वी उगद नहीं

हुनर मुक्खा रोटीए !
प्यार मुक्खा गोरीए !
काहदा है रक्ख निजाम दा
फल कोई लगदे नहीं ।

इस तरह लाखों सयाल
आयेंगे, चले जायेंगे

तेरा अरगवानी ज़हर
कोई रोज़ पी लेगा
और तेरे नक्श हर रोज़
जादू कर जायेंगे

तेरी कल्पना हँसेगी
कोई रात-भर सङ्घेगा
और बरस के बरस
इस तरह बीत जायेंगे

हुनर भूखा है ए रोटी !
प्यार भूखा है, ए गोरी !
तेरे बितने वानगाग
इस तरह मर जायेंगे !

अप्सरा ओ अप्सरा !
शहजादी ओ शहजादी !
टुस्न कँसा खेल है
बि दक् जीत नहीं पाता

रात जाने बितनी बाली है
उम्र को भी जला के देख लिया
चाँद सूरज कँसे चिराम हैं
कोई जल नहीं पाता

ए अप्सरा ! तुम्हारा बुत
और गेहूँ की एक बाली
यह कँसी धरतियाँ है
कुछ भी उग नहीं पाता

हुनर भूखा है, ए रोटी !
प्यार भूखा है, ए गोरी !
निज़ाम का पेड कँसा है
जैसे कोई फल नहीं लगता ।

खण्ड-2



8954

हादसा

वर्हा की इव आरी हसा
हादसिया दे त्तमे ददे
जवणवेती पावा टुट्टा
अम्बर दी इस चौकी उता
डिग पिआ शीरो दा सूरज
अवखा विन्व ववरा पर्ईआ
नीझ मेरी अज जखमी होई
हुनीआ शाहिद अजे वी वस्मे
नीझ मेरी नू कुछ ना दिस्से

दुद्ध दी वून्द

मीत मेरी इक गल्ल चरोकी
वदी वदी में उट्टा सोचा
चल्ला—फुल प्रवाह आवा में
लाश दा वरजा लाह आवा में

हर घटना, समझा सकदी हा
इक घटना समझा नही सकदी

हादसा

घरगों की आरी होंग रही थी
पटाआ मे नीत तुनीन मे
अवसमान एर पाया टूटा
आगमान की चौकी पर म
शी १ का मूरज विगत गया
भीगा म बं बट टितग मय
और उबर उसी हा मवी
कुछ टिमारी नहीं देगा
हुिया सापद अब भी बगनी हाती ।

दूध की बूंद

मेरी नीत, एक पुपारी बात है
बभी-बभी उरभ, है गोपनी है
पारु तरी मे पूत मार मार
माम का करे उगार मार

हर पन्ना मरना मर । है
मद मरना मरना मर । है

लाश नू हुदी भुवख लाश दी
बाक्ष ना होवे कुवख लाश दी

हारे कुवख लाश दी हारे
मोई कुवख नू ममता मारे

लाश दा करजा लाह सबदी हा
कुवख दा करजा कौण उतारे

बदे बदे में उठ्ठा सोचा
कुवख दी लाल वही नू पाडा
अपणा दमखत आप छुपावा
इस करजे तो भुवकर जावा

उठदी पैर दहलीजे रखदी
कुवख दी चोरी मारे मैनू
लाश मेरी दी छाती विच्चा
सिम्म पवे इक बूद दुद्ध दी

सरदल अपनी था तो हिल्ले
उसदी थावें पैर खलोवे
हेशुआ नू कोई तर सकदा ए
दुद्ध दी बूद पार ना होवे ।

रात मेरी

रात मेरी जागदी
तेरा खयाल सौ गया

सूरज दा रख खडा सी
किरना किसे ने तोडीआ

साग का एम साग की भूग हानी है
साध की बोस बाम नही होनी

साग की बोग हार जाती है
गर चुकी बोग की ममता मारती है

साग का बज उगार मवनी है
बोग का बज भी उगार ?

बभी-बभी उठती है, मोचनी है
बाग का बही गागा फाट दूँ
अपने दरनगव आप ही टुगा मुं
इग बजे म मुवर जाऊँ

उठती है, दहलाइ पर पीव रखनी है
बाग की बोरी मुसे मारती है
ओर मेरी साग की छापी म
दूध का एक बुंद टपक पड़ती है

दहलाइ अपनी जगह म हिन जाती है
उगकी जगह पीर टिक जाता है
आंगुलों की कोई गैर मबजा है
दूध की बुंद कोई बग पार कर ?

रात मेरी

मेरी रात आस नहीं है
मेरा मदान गो बदा

सुरज का पेड़ लडा का
'बानी के टिकने का ह सी

चैन दा गौटा किसे न
अम्बर तो अज ऊपेठिआ

बिआ किसे दी नीद नू
गुपने बुलावा दे गए
तारे सलोते रह गए
अम्बर ने ब्रूहा ढो लिआ

इह जखम मेरे इशक दे
सीते सी तेरी याद न
अज तोड वे टावे असा
घागा वी तैनू मोठिआ

बितनी कु दरदनाक है
आज बीड मरे इशक दी
सभना उडीवा दा असा
पत्तरा व्हदे 'चा पाडिआ

घरती दा हऊवा निकलिआ
असमान ने सिसवी भरी
फुल्ला दा सी इक वाफिला
तत्ते थला' चा गुजरिआ

वणक दी इक महिक सी
वारूद ने अज पी लई
ईमान सी इक अमन दा
ओह वी किते बिकदा पिआ

दुनिआ दे चानण नू अजे
सदीआ उलाभे देंदीआ
इस प्यार दी रुते तुसा
नफरत नू कीकण बीजिआ

इनसान दा इह खून है
इनसान नू पुच्छदा पिआ

होने लगे थे और वह का समय
हमारे ही सुख के लिए

दुख के अंत में
हमारे ही सुख के लिए
हमारे ही सुख के लिए
हमारे ही सुख के लिए

मेरे अंत में सुख के
मेरे अंत में सुख के
हमारे ही सुख के लिए
हमारे ही सुख के लिए

मेरे अंत में सुख के लिए
हमारे ही सुख के लिए
हमारे ही सुख के लिए
हमारे ही सुख के लिए

हमारे ही सुख के लिए
हमारे ही सुख के लिए
हमारे ही सुख के लिए
हमारे ही सुख के लिए

हमारे ही सुख के लिए
हमारे ही सुख के लिए
हमारे ही सुख के लिए
हमारे ही सुख के लिए

हमारे ही सुख के लिए
हमारे ही सुख के लिए
हमारे ही सुख के लिए
हमारे ही सुख के लिए

हमारे ही सुख के लिए
हमारे ही सुख के लिए



ईसा दे मुच्चे होठ नू
सूली ने कीवण चुम्मिआ

इह किसतरा दी रात सी
अज दौड के लागी जदा
चन दा इक फुल्ल सी
पैरा दे हेठा आ गया

सूरज दा घोडा हिणबिआ
चानण दी काठी सहि गई
उमरा दे पडे मारदा
धरती दा पाधी रो पिआ

इह रात बिओ अज ग्रहि गई
कालख है कुझ बम्बदी पई
किधर बिसे विशवास दा
शाइद टटहिणा चमबिआ

राता दी अक्ख फरकदी
इह खौरे चगा सगण है
अम्बर दी उच्ची कघते
चानण दा तीला लिशकिआ

की करे टाहणी बोई
फुल्ला दी ममता मारदी
इनसान दी तकदीर ने
इनसान नू अज आबिआ,

हुसना ते इश्का बालिओ ।
जावो लिआवो मोड ने
विशवास दा इक जातह
जित्ये वी बिधरे टुर गया ।

ईसा व पात्र हाठा वी
मूनी न वंग धूम विद्या

यह दिन तरह वी राग धी
आत्र जब भागवर गुजरी
पाँद का दन पून या
पैरा तन रीग गया

गूरज का पात्रा हाहाहाया
रीग ॥ वी काठी उतर मयी
उमरे का गपर तय करारा
परती का मुगाविर रो निया

यह राग आज क्या टिठव मयी
तियाही भी कुछ वीग रही
वही तिगी विदवाम का
सायद जुगजु चमक उठा

राग की आँग पराती है
यह सायद अछटा शगुा है
भागमान वी ऊँची दीवार पर
रोशनी का एक निनात चमक उठा

कोई टहनी क्या वरे
पूला की ममता सताती है
दन्मान वी तकदीर ने
आज दगात स कहा,

हुम्न और ददवाली !
जाओ, मीटा साओ
विदवास का एत यात्री
जहाँ वही भी चला गया

परदेसी

भरे होए ने दोवें बोझे
सारे पीण्ड ते रूबल छालर
लफज जिवें नोटा दीआ थहीआ
पर इह रकम वदेशी भिवका

इश्क तेरा में किवें खरीदा
वेप्रवाह माण दे मत्ते
लफज दिआ ते मन दा सिक्का
बदला किहडे काउटर ऊत्ते

में आशक असलो परदेसी ।

दाग

कच्ची कच मुहब्रत वाली
लिम्बिया अते पोचिया मत्या
फिर बी इसदी वक्ली विच्चो
राती इक खरेपड सत्या

असलो जिवें मुघार हो गया,
कच दे उत्ते दाग प गया

इह दाग अज हें हें करदा
इह दाग अज बुल्लीहा टेरे
इह दाग अज अही पै गया
इह दाग अज छडीआ मारे

बिट बिट तक्दा मेरी बल्ले
अपणी माँ दा मूह सिझाणे

परदेसी

दोनों जेबें भरी हुई हैं
गभी पाउचट, कबत, और डालर
सफ़र जैग तोटों के बचकन
पर यह खग बिदेसी गिबत

तेरा खरन र्थ न गरीबूँ
बेगलबाह और अभिमागी
सफ़र द र्द और मा का गिबका
बीन न पाउचटर पर बदनूँ

मैं आगिब बिलकुल परदगी

दाग

मुहप्यत की बरुची दीवार
सिपी हुई, मुगी हुई
फिर भी खगने पहनूँ मे
खग, एव टुकडा टूट गिरा

बिलकुल जैग गुराख हो गया
दीवार पर दाग पड गया

यह दाग आज र्हे र्हे करता
यह दाग आज होठ बिसूरे
यह दाग आज जिद् करता है
यह दाग कोई बात न माने

टुकुर टुकुर मेरे को देते
अपनी माँ का मुँह पहचाने

बिट बिट तबदा तेरी बल्ले
अपने पिओ दी पिठ्ठ पछाणे

बिट बिट तबदा दुनीआ बल्ले
सीण लई पघूडा मग्गे,
दुनीआ दे कानूना कोलो
खेडण लई छणवणा मग्गे

कुझ ते मुख्वा बोल नी माए
एम दाग नू लोरी देवा
कुझ ते मुख्वा बोल बाबला
एस दाग नू कुच्छड चुक्का

दिल दे वेहडे रात पै गई
एस दाग नू किज सुआवा ।
दिल दे कोठे मूरज चढिआ
एस दाग नू किज छुपावा ।

अन्नदाता

अन्नदाता ।
मेरी जीभते तरा लूण ए
तेरा ना मेरे बाप दिआ होठा ते
ते मेरे इस बुत्त बिच
मेरे बाप दा खून ए
मैं किवें बोला
मेरे बोलण तो पहिला
बोल पदा ए तेरा अन्न
कुछ कु बोल सन,

टुटुर टुटुर तेर को देग
भरने बाप की पीठ पट्टपा।

टुटुर टुटुर दुनिया को देगे
सो। के लिए पातना मांगे
दुनिया के बानूना ग
घेनने को शनुमुना मांगे

माँ ! कुछ मा भुंछ ग बाल
दग दाग को मोरी गुनाऊँ
बाप ! कुछ सो बह
दग दाग को माँ मे ल लूँ

मित के आंगन मे रात हा गयी
दग दाग का बँग गुनाऊँ !
दिन की छा पर मूरज उग आया
दग दाग को बहरी गुनाऊँ !

अन्नदाता

अन्नदाता !
मरी जवान पर तुम्हारा नमक है
तुम्हारा नमक मेरे बाप के होंठो पर
और मेरे दग बुत मे
मेरे बाप का खून है
मैं बँस बोली ?
मेरे बोलो से पहले
तेरा अनाज बोल पढता है
कुछ एक बोल थे,

पर असी अन दे कीडे
ते अन भार-हेठा
ओह दब्बे गए हन

अनदाता !
कामे माँ बाप
दित्ते कामे न जम्म
कामे दा कम्म है
सिरफ कम्म
बाकी वी ता कम्म
कर दै इहो ही चम्म
ओह वी इक कम्म
इह वी इक कम्म

अनदाता !
में चम्म दी गुट्टी
खेड लै खिडा लै
लहू दा प्याला
पी लै पिला लै
तेरे साहवें खडी हा अँह
वरतण दी सँ
जिवें चाहें वरत लै

उगगी हा
पिसी हा
गुज्जी हा, विली हा
ते अज तत्ते तवे उत्ते
जिवें चाह परत लै
में बुरकी तो बद्ध कुस नही
जिवें चाहे निगल लै
तू लावे तो बद्ध मुस नही
जिवें चाह पिघल लै
लावे'च लपेट लै
कदमा'ते खडी हा
बाहवा'च समेट लै

पर हम अनाज के बीड़े
और अनाज के भार तले
बहु बीत बढ़कर रह गये

अन्नदाता !

मेरे माता पिता बामनर ।
बामनर की माता बामनर
बामनर का बाम,
मित्र बाम
बाकी भी तो बाम
यही बाम करता है,
बहु भी एक बाम
यह भी एक बाम

अन्नदाता !

मैं मांग की गुड़िया
सेल ल गिना से
लू का प्याला
पी स पिता से
तेरे मामन छोटी हूँ
दस्तेमाल की चीज
दस्तेमाल कर लो

उगी हूँ

पिगी हूँ
बलन ग बिली हूँ
आज गर्म तवे पर
जैग चाहो उलट लो
मैं एक निबाले से बढ़कर कुछ नहीं
जैग चाहो निगल लो
तुम लावे से बढ़कर कुछ नहीं
लावे म लपेट लो
बदमा म लटो
बाँहा में समेट लो

अनदाता !
मेरी ज़बान
ते इनकार ?
इह किवें हो सकदे !
हा प्यार
इह तेरे मतलब दी सै नही

इक गुनाहगार

रोज मनदा हा अकल दी
अज ना सही,
रोज बहिदा हा 'हा'
अज 'नाह' सही

मेरी तोबा !
नील चद्र दी घाटी
जित्ये उमरा दे साल
सदीआ पए तग्गदे
सुधरे आकाश वी ता
नित चग्गे नही लगद

नीलीआ रगा दी रत्त
अज फरकदी मेरी
ते मेरे खून बरगी
काली बोली हुनेरी
दता जहे परबत
त उरथे मूह भनदे बदलाँ दी टक्कर
ते अज में त्तक्का
गुनाहा दी खड्ड जहीआ
डूधीआ खड्डा

भनसता !
मरी जबा
और हार ?
यह कैसे हो सकता है !
हैं प्यार
यह तेर मननव की जे गही

डक गुनाहगार

रोड मानता हूँ अजब की
आज न गही,
रोड कहता हूँ, 'ही'
आज 'न' गही

मरी तोबा !
नील घदर की घाटी
जहाँ उमर के गान
गदिया बनते
उजब आवाज भी तो
रोड अरुद नही लगते

नीली गदियों का लड़
आज पड़व रहा है
और मेरे लड़-जमी
बाली आँधी चढ़ आयी
देव दानव में परबत
यहाँ सर फोड़ते बादला की टक्कर
और आज मैं देखूँ,
गुनाहा की साईं जैसी
गहरी साहसा

ते उहा विच बहल
पाणी हो वगदे
सुपरे आकारा वी ता
नित चग्गे नही लगदे
रोज मनदा हा अकल दी
अज ना सही

समाज दी आवाज है जवान
मेरा खीसा वी है जवान
परचा लवागा
कुछ आसेगा घरम
टेक के मर्या वरचा लवागा

कूएगी रूह
ते पिछले खिआल
मग के साईकालोजी तो करन
सरचा लवागा

रोज मनदा हा अकल दी
अज ना सही

इडीपस

दहलीज तीं उरली तरफ मेरा गुनाह
दहलीज ता परली तरफ मेरी सखा

सोचिआ सी अत मुचची
दुद्ध वी इह वाशना
पर होठ जूठे हो गए
होठा दी पहली 'वाज नें
तुतला के जो कुझ आखिआ
उह बोल झूठे हो गए

और उनम बादल
पानी की तरह बहते
उबलते आवाज भी तो
निग अम्मे नहीं गन्त
रोड मानता हूँ अजल की
आज १ सही

गमाज की आवाज जवान है
मेरी जेब भी जवान है
परचा सूँगा
घर्म कुछ बहगा
मापा टेकवर बहना सूँगा

आगमा कुछ बहगा
सस्वार कुछ बोलेंगे
मनाबिज्ञान मे कारण माँगवर
उगहें भी धूप करा सूँगा

रोड मानता हूँ अजल की
आज १ सही

डडीपस

दहलीज के इस तरफ़ मेरा गुनाह
दहलीज के उम तरफ़ सजा

सोचा था बहुत मुञ्ची
दूध की यह महब
हर हाठ जूठे हो गये
हाठों की पहली आवाज न
सुनता वर जो कुछ पहा
वे धोल झूठे हो गये

अज अवल दे परदेस विच
लभदा हा अपनी नजर नू
नजर चारमि दी गिरी
डरदी है सुपना जोड के
डरदी है सुपना तोड के
साहमणे हू दी नही

जिस हनेरी रात विच
मालक सा सारी बुक्ल दा
अज ओह हनेरा ढल गया
अज डग दित्ता जिसम ना
वानण दे काले नाम ने
इक जहर है चडदा पिजा

हुण शायत में सारी उमर
जिसमा द चिक्कड फील के
लँभागा एस इश्क नू
वरजित अवरजित मास विच
लँभागा एसे महिक् नू
लँभागा एस मुशक नू

इह की पता किसदी रजा !
दहलीज तो उरली तरफ मेरा गुनाह
दहलीज तो परली तरफ मेरी सजा

लगडी छा

रुक्खा दी एक पाल खलीती

जा अड्डी विच रोडा चुन्मा
जा गिट्टे नू लोच आ गई
जा गण्डे चप्पणी टुट्टी

आज प्रांग के परने म
 अपनी तरह की कृपा है
 तरह गरमिन्ना मेरी
 दली है मरता जोदर
 दली है मरता गोटकर
 मरता आगे तू।

जिग अंधेरी रात म
 मातिल या मारी बोग का
 वह अंधेरा दन गया
 आज दग तिया है जिग का
 मूरज क कास ताग त
 इन जहर है अब पढ़ रहा

अब पापद भी मारी उन्न
 जिस्मा के बीच मे हाथ डाल
 दुर्दगा दमी दान का
 बजित-अपजित मांग म
 दुर्दगा दमी महर का
 दुर्दगा दली मय्य की

क्या जानूँ यह जिगकी रखा !
 दहलीज के दस तरफ भरा गुनाह
 दहलीज के नम तरफ मेरी गखा

लँगडाता साया

दरख्त की लप बतार खड़ी है
 या एही में कंबट खुभ गया है
 या टखन म मोच आ गयी है
 या घुटने मे जरब आ गयी है

जा मोडढे दी हूँ उतरी
जिऊँ जिऊँ टाहणी कदम बधावे
तिऊँ तिऊँ उसदा पर लगावे

हर इक् कूला टाहणी पिच्छे
सुक्की लक्कड दी इक् टोहणी
जा बाहवा दा गुट्ट भज्जिआ
जा बाहवा दी भज्जी कूहणी
तारा इज पलचीआ गईआ
जुलफा विच अडकाहवा पईआ

जिने लवे रक्ख दे पत्ते
उने लवे कुक्ख दे पत्ते
माली जिनीआ जाचा वाला
रक्ख उ नीआ गडढा वाला
जिऊँ जिऊँ टाहणी पर बधाव
तिऊँ तिऊँ उसदी छा लगावे

मुडीए तुडीए कुब्बे होईए
गुच्छा करीए अग आपणे
किसे रक्ख दी छावें बहीए
ते उस रक्ख द मत्थे अदर
जिहडा वी कोई फुल्ल खिडेगा
आओ ओस फुल्ल नू रोईए ।

इक नगर
(इक दिन)

मीह कदा दा थम चुक्का ए

सारा नगर घडी कु पहिला
चिक्कड दे विच डिग्ग पिआ सी

या कपड़े की हवा टूट गयी है
जिन्ना टहनी कदम बढ़ाती है
उठता हा उमका पाँव मँगटागा है

हर माडुक टहनी क पीरे
मूगी मरघी की एर बँगाती है
सायद कसार्ई उतर गयी है
सायद कुहनी टूट गयी है
गारे गार गढमढ हो मन है
गारी कुनरें उमन्न गयी है

जिन्ना कसमन पट के पसी है
उतन कोमन वोग क पने है
मानी जिन्ना मयागा हुआ
दरमन उतना गौटावागा हागा
जिन्ना टहनी कदम बढ़ायगी
उतना ही गागा मँगटायगा

आभा, हम मुह-सुन क कुयडे हा जायें
अपन अग इकट्टा कर में
जिन्ना दरमन क साय म बँडे
ओर उम दरमन के साय पर
जो भी कार्ई पून गिलेगा
आओ, उम पन को रो लें ।

एक नगर (एक दिन)

मह कच का धम चुना है
सारा नगर पस भर पहन
कीचट म गिर गया था

तलीआ परो मगा उठिठआ
 निग वडी ते बाहया रगदा
 किम ट्ट ते पैर टियाग
 कोई बास वपगी विच्च घरण
 मसा लक्व नू सिद्धा करदा
 खडे होण नू जूस रिहा ए
 मीह वदो दा थम चुक्वा ए
 इह मत्थे ता, पुढपुढीआ तो
 अजे वी मुडवा पृझ रिहा ए

एस नगर वी सुपन औद
 विनीआ वी सोया नू भीटो
 फिर वी अदर आ जादे ने
 विधरे सगमरमरी वादी
 दस्स थोम दी पा जाद ने

सारा नगर उहा दे जावे
 नीदर दे विच तुर पदा ए
 दूर भविल दा माहली बाहली
 कुछ रमता तैह कर लदा ए

फिर रसते विच मूरज दा
 इक अह्नी खोडा इसनू लग्गे
 टुट जाए गोडे दी चप्पणी
 अरका दे विच्चो लहू वग्गे

वरतमान दी बद गली
 ते दुक्ल मुक्ल दी वड साहमणे

रात वराते जिही पैरी
 जिहडे वी रसते ते जादा
 सुबह सवेरे ओही पैरी
 उमे रसनिओ मुडवे औदा

इज हमेशा एथा तुरदा
 अते हमेशा एथे रहिदा

हृदयियों के बल मुस्लिम ने उठा
 बिना सहयोग पर बाजू रखना
 बिना दूट पर गाँव लिखा
 कोई योग बगल में सता
 मुस्लिम ने जमर सीधी करवा
 गदा हाँ का जून रण है
 मह बच का धम घुसा है
 यह भाषे और कानटिमा सा
 सभी तक पगीता पाठ रहा है

हम जमर में भी गया आता है,
 गाँव के बिना ही भी भाँसा
 यह फिर भी अन्दर आ जाते हैं
 कहीं बाईं गमबरमर की यादा है
 यह उमरा पता न आता है

गारा जमर उतारा कर मातर
 नीला म बल दाता है
 दूर भविष्य का जल्दी-जल्दी
 कुछ रागात प्य कर सेना है

फिर रास्ते में मूरज की
 इन टोकर हम लग गे है
 घुटन पर घोर आती है
 कुहिया में मूत टपकता है

यतमात की वक्त मनी
 सामने हुए और भूम की धीवार

रात के समय जित पैरा
 जिन रास्ते पर भी जाता है
 मुबह के वक्त उन्ही पैरा
 उमी रास्ते लोट आता है

मैं हमेशा यही गालता है
 और हमारा यही रहना है

(ते फेर इक दिन)

रात बंदो की लग्य चुकी ए
सारा नगर चौकडी मारी
इक फलसफी बागू बैठा

ना कोई गल्ल सुणे ना आमे
ना कोई इसदे मत्ये उत्ते
लीक हरल दी, लीक शीक दी

जा ता इसने बरतमान दी
बद गली दा भेत बुझिआ
इक फलसफी बागू बठा
वे जा अज दे मीह बिच बठठा

मीह कदा दा धम चुक्का ए

इक शहर

1

जेहडी फसल तारिआ बीजी
किसने चोर गुदामी पाई
बहल दी बोरी नू क्षाडा
रात दी मडी उडुन घट्टे

च दरमा इक भुक्खा वच्छा
सुक्के धण नु मूह मारदा
घरती-माँ किल्ले 'ते बज्जी
अबर दी खुरली नू चट्टे

(और फिर एक दिन)

रात कभी की गुडर चुकी है
मारा नगर आतनी-आतनी मार
रक्त पत्रगपनी की तरह खँटा हुआ है

न कोई बात सुनगा है न कहेगा है
न अपने माथे पर
कोई रूप की देगा है न ही कोई शोर की रगा

या तो अपने बरमान की
बद गया वा नेद वा लिया है
और रक्त पत्रगपनी की तरह खँटा हुआ है
या फिर आज मह म गिर गया है

मह कब वा घम चुका है

एक शहर

1

वह पगल जो मिनारों न बोयी थी
विगन देने चोर गोदाम म डाल लिया
बादल की बोरी को हाथवर देता
रात की मण्डी में गद उठ रही है

पाँच एव भूने बछड़े की तरह
गूने घास को निचोड़ रहा है
धरती माँ अपना घान पर बँधी
आकाश की चरनी को चाट रही है

2

हसपताल दे बूहे अग्गे
हक्क, सच, ईमान ते कदरा
किने लफ्फ वीमार पए ने
भीह जही इक् लग्ग गई ए

खबरे कोई लिखेगा नुसखा
खबरे नुसखा लग्ग जावेगा
पर हाली ता इज जापना
अउध उहा दी पुग्ग गई ए

3

एस शहर दे विच्च इक्क धावें
था कि जित्ये रहण निधावें
जिस दिन कोई ना मिले मजूरी
उस दिन जिद उहा दी थूरी

पहली रात घुठेपे वाली
कना दे विच आ के कह गई
कि एस शहर दे विच उहा दी
अहल जवानी चोरी हो गई

4

कल रात कहर दा पाला
अज तडके सवा रामती नू
सडक दे उत्तो लाश मिली है
नाओ धाओ कुछ पता ना लग्गे

मढीआ दे विच अग्ग पई बलदी
कोई ना एस लाश नू रोइआ
जा कोई मोइआ है इक् मगता
जा कोई साइन् फलसफा मोइआ

असजान के दरवाजे पर
 हल, मख, ईगात और कदरें
 जात किरते ही सगड धीगार पटे हैं
 एक भीड़-भीड़ कट्टी हा गयी है

जाने कोई जुग्गा। गिगेगा
 जात कट जुग्गा लम जादगा
 मेकित अभी तो एगा समगा है
 दाक जिन पर हा गय है

दम साहर मे एक घर,
 घर कि जती बेपर रहते हैं
 जिन जिन को- मजदूरी नहीं मिलती
 उम जिन यह पनेमान हाते हैं

बुढ़ाग का पहली रात
 जात जाता न धीर न गज गयी
 बि एम साहर म उतरी
 भरी जयाति घोरी हा गयी

बल रात बला की सदी थी
 आज गुबह मेवा-ममिति को
 एम नाग सटव पर पटी मिली है
 नाम व पता कुछ भी मासूम नहीं

दमशात मे आग जल रही है
 इस साग पर रोनेवाला कोई नहीं
 या तो कोई भिगारी मरा होगा
 या शायद कोई पनसफा मर गया है

5

किसे मरद दी बुककल दे विच
 बिसे कुडी ने चीक मार के
 पिङ्डे तो इक पच्चर लाही

थाणे दे विच हासा मचिआ
 काहवाघर विच ही ही होई

सडका ते कुछ हाकर फिरदे
 इक इक पैसे खबर बेचदे
 रहिदा पिङ्गा फेर नाचदे

6

गुलमोहर दे रुखा हेठा
 लोकी इक दूजे नू मिलदे
 बडी जोर दी हसदे गऊदे
 इक दूजे तो अपनी अपनी

मीत दी खबर छुपाना चाहुदे
 चिट्टा जिहा कबर दा पत्यर
 हत्या दे विचच चुस्की फिरदे
 अते लाश दी राखी बरदे

7

खडखड खडखड करन मशीना
 शहर जिवे इक छापाखाना
 हर इक वंदा एस शहर दा
 इक इक बल्ले अक्खर वागू

हर पैगम्बर—कम्पोजीटर
 अक्खर मेल मेल वं वेगे
 अक्खरा द विच अक्खर उणद
 वदे नार्द फिकरा ता बणदा

5

किसी मद के भागाग म
 काई सदकी पीग उठी
 जेन उसके बदन मे कुल टूट गिरा हो

मान म एन बटकरा सुमद दुभा
 बटपापर म एन हेंगी बिगर गयो

गदकी पर कुल लीनर फिर रह है
 एन-एक पैग मं गबर बेष रह है
 बषा-गुषा जिग्म फिर मे नोष रह है

6

गुलमोहर ब गरा गने,
 योग एन-गुमरे मे गिनत है
 जार म हंगत है गान है
 एन-गुमरे मे अगती-अगती

मीन की गुबर गुगारा ग्राहते है
 गगमरमर कद्र वा तापीज है
 हापा पर उठाप-उठाप फिरते है
 और अपनी लाग की हिपाजत पर रह है

7

मगीनें गद-गद कर रही है
 राहर जस एक छापाखाना है
 दग राहर मे एन-एन इस्तात
 एन एन अदार की तरह अवेला है

हर पैगम्वर एन बम्पोजीटर
 अक्षर जाह जाहपर देखता है
 अदारो म अदार बुनाा है
 कभी मोई दिवरा नही बन पाता

दिल्ली एस शहर दा नाओ
 कोई नाओ बी हो सकदा ए
 (नावा दे विच्च की पिआ ए ')
 रोज भविख दा सुपना राती

वरतमान दी मँली चादर
 अद्धी अपने ऊपर ताणे
 अद्धी अपने हेठ विछावे
 वि ना चिर बुझ सोचे, जागे
 फिर नीदर दी गोली खावे

तीसरी कसम

8954

जिन्द-कुडी नू कसम पहिलडी
 'बली' नाआ दा इक सी बदा
 आप हृदरा अक्खड, छिदा

पहिला सच्च जिहदा सी 'हूरा'
 अत्तिम सच्च जिहदा सी 'मुक्का'

जिन्द-कुडी दा भास चक्ख के
 मुट्ठी दे विच सोना देके
 छाती उत्ते पैर रक्ख के
 जरी दुसाले ताण बोलिआ—

'तू मेरी हशरा तो तीवी
 तू मेरे लई जम्मो जीवी
 तू ना होर किस दी होवी''

दिन्वी इग राहर का नाम है
 बोर्द भी नाम हो गयता है
 (नाम म गया रता है!)
 भविष्य का गपना रोज रात को

यतमाग को मली पादर
 आधी ऊपर आइता है,
 आधी नीचे बिछाता है,
 बिननी देर कुछ सोचता है, जागता है
 फिर नींद को गाली खा लेता है

तीसरी कसम

जिन्द-बुडी को पहली बगम
 'बलि' नाम का एग आदमी या
 अक्कड और बलगाम

जिसका पहला सच या 'टहाना ,
 आखिरी सच या 'मुक्ता'

जिन्द-बुडी का मांस चसवर
 मुट्टी में सोना देवर
 छाती पर पाँव रखवर,
 जरी दुशाले तानवर बोला,

"तू मेरी युग-युग से तिरिया
 मेरे लिए जीना मरना
 और किसी की तू भन होना ।"

एना वह के, कसम खुआ के
जिद-कुडी नू महली पा के
चीपट रोहण बैठ गया उह

जिद-कुडी नू कसम दूसरी
'वली' नाओ दा इव सी बदा
जिसने बगली दे विच पाइआ

इव भरोसा नेतर हीणा
इव चेतना सेधो हीणी

रिद्धी दा इव घागा लैके
सिद्धी दी इव सूई लैके
जिद-कुडी दी जीभ सीऊँ क
वना विच गुरमतर दित्ता

“भटकी होई आतमा बच्चा ।
जो कुझ दिस्से ओहीओ कच्चा
जो ना दिस्से ओहीओ सच्चा ।”

एना वह के, कसम खुआ के
जिद-कुडी नू भोरे पा के
लाण समाधी बैठ गिआ उह

भुवली पिआसी जिद कुडी ने
सोने नू इव चक्क मारिआ
मिट्टी नू इव चक्क मारिआ
दोवें कसमा भन के बोली

‘ मेरे अपने मत्थे अदर
तीजा नेतर खुल रिहा है
दूर सजण ते राह दुहेला
आपे गुरु ते आपे चेला
तीजी कसम खाण दा बेला’

शता सहस्र वसम दिनाकर
जिन्द-फुडी का महल म सावर
यह चीपड़ गेता बँठ गया

जिन्द-फुडी को दूसरा वसम
'बलि' नाम का एत आदमी था
जिन्दो अपनी बाली में रते थे

एक भरोसा दृष्टिहीन
एक बेता दिगाहीन

मिडि का एत भागा लेबर
मिडि को एत गूँ मरर
जिन्द-फुडी की जीभ को तीपर
पानों म गुर-मन्न दिया

भटकी हुई आत्मा बच्चा !
जा दिग्गता है यह है बच्चा,
जो नहीं दिग्गता यह है सच्चा ।”

शता सहस्र वसम दिनाकर,
जिन्द-फुडी को कोठरी म डालकर
यह समाधि लगाकर बँठ गया

भूमी-व्यापी जिन्द फुडी न
सोने को तसपर देगा
मिट्टी को चक्कर देगा
दोना वसम ताटार बोली

‘ भरे अपने माये अदर
तीसरा नेत्र खुल रहा है—
दूर सजन और राह दुहला
आप गुरु और आप ही चेला
तीसरी वसम खाने की बेला ।”

खण्ड—3

वारिस शाह नूँ ।

अज आसा वारिसुशाह न
कितो कबरा विचो बोल ।
ते अज कितावे इशक दा
कोई अगला बरका फोल ।

इक रोई सी धी पजाब दी
तू लिख लिख मारे बैण,
अज लक्खा धीआ रोदीआ
तैनु वारिस शाह नू कहण

उठ दरदमादा दिजा दरदीआ
उठ तक अपणा पजाब
अज बेले लासा विछीआ
ते लहू दी भरी चनाब

किने ने पजा पाणीआ विच
दिती जहिर रला
ते उन्हा पाणीआ धरत नू
दिता पाणी ला

इस जरयेज जमीन ने
लू लू फुट्टिआ जहर
गिठ गिठ चढीआ लालीआ
ते फुट फुट चडिआ कहर

विहु बल्लिसी वा फिर
बण-बण बग्गी जा
हर इव वांस दी बमली
दित्ती नाग बणा

नागा नीले लोक मूह
बस फिर डग ही डग
पलो पली पजाव द
नीले पै गए अग

गलिआ टुट्टे गीत फिर
तब लिओ टुट्टी तन्द
त्रिजणो टुटीआ सहेलीआ
चरस्तडे घूवर बन्द

सणे सेज दे बेडीआ
लुडडण दित्तीआ रोहड
सणे डालीआ पीघ अज
पिपला दित्ती तोड

जित्थे बजदी फूक प्यार दी
वे ओह बमली गई गुआव
राज्ञे दे सभ वीर अज
मुल गये उसदी जाच

घरती ते लहू वस्सिआ
कबरा पईआ चोण
प्रीत दीआ शाहजादीआ
अज बिच मजारा रोण

अज सब्भे 'कैदो' बण गये
हुसन इश्क दे चोर
अज कित्थो लिआईए लबम के
वारिस शाह इफ होर

... ..
बाँसुरी बजाना भूल गय

परती पर 'तू बरमा
कन्नो म गून टपरो सगा
ओर प्रीत भी सहजादियाँ
मजारों म रोने सगी

आज जैस सभी 'बैदो' बन गय
हृन्म और मन के चोर
मैं वहाँ सा बूँद साऊँ
एर वारिस चाह और

अज जासा वारिग शाह नू
विता पयरा विचो बोल ।
ते अज विताब इदव दा
योई अगला बरवा फोल ।

मजबूर (1947)

मेरी मा दी कुवख मजबूर सी
में भी ता इव इनसान हा
अजादीआ दी ठरुवर विचव
इव राट्ट दा तिगन हा
उम हादसे दा चिह्न हा
जो मा मेरी दे मत्ये उत्ते
लगणा जरूर सी
मेरी मा दी कुवख मजबूर सी

घिरकार हा में उह जिहडी
इनसान उत्ते पै रही
पैदाइश हा उम वक्त दी
जद टूट रह सी तार
जद बुझ गया सी सूरज
ते चन दी बेनूर सी
मेरी मा दी कुवख मजबूर सी

में खरीड हा इक जखम दा
में घबवा हा मा दे जिसम दा
में जुलम दा उह घोझ हा
जो मा मरी डोदी रही
मा मेरी नू पट 'चा
सडिआद इक औदी रही

धारण जाए । मैं तुमका बहती हूँ
आती बह ग उठी
और दरब की बिगाह का
कोई मया बर लीगा।

मजदूर

(1947)

मरी माँ की शोक मजदूर का
मैं भी तो एक दू गान हूँ
आटागिरी की शहर म
उम थोड़ा का गिगात हूँ
उम हाथ की सपौर हूँ
आ मरी माँ के माथ पर
सगाता खर भी
मरी माँ का शोक मजदूर थी

मैं वह सात हूँ
जो दुगात पर पठ रहा है
मैं उम बका की पैनाटा हूँ
जब तार टट रह थे
जब गुरज सुझ गया था
जब धाँद की आँस बेरूर थी
मेरी माँ की शोक मजदूर थी

मैं एक खगम का गिगात हूँ
मैं माँ के जन्म का दाग हूँ
मैं जन्म का यह बोझ हूँ
जो मरी माँ उठाती रही
मरी माँ की अपन पट स
एक दुगाथ गी आती रही

घीण जाण सकदा है
 कितना कु मुसकिन है
 आसरां दे जुलम नू
 इक पेट दे विच पालणा
 अगा नू झुलसणा
 ते हड्डा नू बालणा
 फन हा उस वकत दा मैं
 आज्ञादी दीआ बरीआ नू
 पै रिहा जद बूर सी
 भरी मा दी बुबख मजबूर सी

हवाड

(नवम्बर 1962)

इक दोसती दे फुल्ल 'चो
 आई हवाड खून दी
 अक्ला दा मत्या ठणकिआ
 तहजीव दे इखलाक दे
 पिण्डे 'त मुढका आ गया
 त आपणे द'दा दे हेठा
 जीभ टुक्की अमन ने
 अमन दी इक सहूँ ने

इक दोसती दे फुल्ल 'चो
 आई हवाड खून दी
 सु'घी है काली रात ने
 सु'घी है चिट्टे दिहूँ ने

इह खून है विश्वास दा
 नाडा च खोल जायेगा
 डुल्लेगा मिट्टी चुम्म के
 उमगेगा मौल जायेगा

शीत ज्ञान बिगता मुक्तिम है
 पट मे एक भुम्भ को पानता
 अंग भग को भुम्भगाता
 और हृदियो को जलता
 मे उग सकत का पान हूँ
 जब आजादी के पेट पर
 और यह रहा था
 आजादी बहुत पान थी
 बहुत दूर थी
 नरी माँ की वीर मजबूत थी

गन्ध

(मसूदा, 1962)

एक दोस्ती के पून म
 गून की गंध आयी
 अरुत का माया टरवा,
 तहजीब क और टगमाक क
 बान पर पगीता आ गया
 अमन ने, और अमन के याद ने
 अपनी खवान दाता तने दवा सी ।

एक दोस्ती के पून म
 गून की गंध आयी
 इस गंध की कानी रात ने सूषा
 इस गंध की उजते दिन ने सूषा

यह विदवाग का गून है
 रघों म लीन जायगा
 बरेगा मिट्टी धूमकर
 उगगा, और फैल जायगा

उठेगी इसदी वाशना
कणका 'च फँल जायेगी
उठेगी इसदी वाशना
कलमा 'च फँल जायेगी

इह वाशना इतिहास दे
साहवा चो औंदी रहेगी
कि खून दी इह वाशना
वारस है साडे जखम दी

उह जखम, जु इतिहास दी
छाती ते खुणिआ जायेगा
इतिहास, जिहडा खून दे
इस अमल ता शरमायेगा

इह खून, जा इनसान दे
हत्या 'चो बगदे जा रह
इह जखम, जो इनसान दे
हत्या ते लगदे जा रह

इह ओही सोहणे हत्य ने
जो फुल्ला नू बीज सक्दे ने
इह ओही आशक हत्य ने
जो हुसना ते रीझ सक्दे ने

इह ओही हुनरी हत्य
जो साजा नू छेड सक्दे ने
एट ओही किरती हत्य ने
जो सुपने जोड सकदे ने

इह हत्य पाणी पीण ते
अगनी नू बन्ह सकदे न
सूरज दा चुल्हा बाल के
हाँडी नू रिह सकदे ने

इसकी गंध उठेगी
मेहूँ में रैन आयेगी
इसकी गंध उठेगी
बलमों में रैन आयेगी

यह गंध इतिहास के
गीता में आती रहती
कि गून की यह गंध
हमारे जन्म की धारिण है

यह जन्म इतिहास के
गीते पर गूद आयेगा
और गून के इस अमल पर
इतिहास समिन्दा रहेगा

यह गून जो इन्सा के
हाथ में बहते जा रहे
यह जन्म जो इन्सा के
हाथों पर लगते जा रहे

यह वही प्यारे हाथ है
जो पूर्वा की उगा मचते हैं
यह वही आगिज हाथ है
जो हुन पर रोता मचते हैं

यह वही हुनरी हाथ है
जो माया को खेद मचते हैं
यह वही कभी हाथ है
जो मचने जोर मचते हैं

यह हाथ पाती पवन और
अग्नि को, बांध मचते हैं
सूरज का चूल्हा जलाकर
हाँडी को रोध मचते हैं

इहें हत्य जो घरती दीआं
जुलफा सँवार सकदे ने
इह ओही सोहणे हत्य
जो दुनीआ उसार सकदे ने

फुल्ला ते जुलफा दी कसम
हत्या ते जखम लाओ ना
इह कारव दे हत्य ने
कातिल बणाओ ना

अज हत्य देवो साथीओ
कि हत्या दी राखी वासते
उह हत्य जो जाबर बणे
अज मोड दित्ते जाणगे
उह हत्य जो कातिल बणे
अज तोड दित्ते जाणगे

27 मई, 1964

इह किसतरा दी रात सी !
इह किसतरा दी बात है !
नीदर सी बज वेहो जही
सुपने दा मत्या ठणकिआ

चरखा जु भज्जा घ न दा
पच्छी 'चो तारे बह पए
घरदी दे कम्बदे हत्य 'चा
पूणी नू किमने खोह लिआ !

इतिहास न हऊजा लिआ
समया ने त्तिया सहम वे

यह हाथ जो धरती की
जुगले तँवार मकत है
यह वही प्यारे हाथ है
जो दुनिया उगार करते है

पूरी और जुलगा की बगम
हाथों पर जगम न समाओ
यह बारान्द हाथ है
रुहे कातिग न बनाओ

आज हाथ दो ओ मापिया
कि हाथों की हिराजत के लिए
यह हाथ जो जाजिर बने
आज माट दिव जायेग
यह हाथ जो कातिग बना
आज ताट दिव जायेग

27 मई, 1964

यह किस तरह की राग थी !
यह किस तरह की याग है !
आज भी वैसी थी
कि मया का माया ठार उठा

घाँ का घाँ टूट गया
टोकरों से तान गिर पड़े
धरती के कपिल हाथ से
पूरी को बिराने छीन लिया !

इतिहास ने गहरी साँस ली
बस ने राहमबर देला

पूरव दी वाली अवस विच
सूरज दा अघर लिदाविआ

इव मन मेरे दा महल सी
पै गई अचानक भऊजली
इह गीत है बेहो जिहा ।
जु सघ दे विच अटविआ

अबर दी चादर पाढ के
कफन कोई देंदा पिआ,
इह लाश विहडे फुल्ल दी
अज बाग सारा रो पिआ

चानण दी सूई

(27 मई 1964)

सारी किममत उधडी होई
देस मेरे दा बज्जण पाटा
मगदा इव चानण दी सूई

वक्त महा सागर सी कोई
घोर हनेरा रिडक रिडक के
आखर चौदा रतना बागू
लब्ध लई चानण दी सूई

हर सगराम जिवें इव घागा
हर मुग्ना घागे नू रगो
जिदडी दा मैं पीहडा डाहिआ
किसमत दी फुलकारी छोही

मूरख की बाती जलित न
मूरख का अंगूथ मकर उठा

मन का एक महान था
अपकार हृत्पथ मय मयो
एह आज का मीत बैगा है !
मर मन में अथ मया

भाग्यमात की चादर पादकर
बोई बयन मी रहा है
मह विम पृथ की माया है
आज माया बाग रा दिया

रोशनी की सूई

(27 मई 1964)

मारी विमय उपड़ी हुई
मने मग की भाङ्गना पटी हुई
रोशनी की एक सूई माँगनी थी

कब एक महानगर था
घोर अपकार का मया विषया
धीरे आशिर चोहू रता की तरह
राशनी की सूई बुँड निशानी

हर सपना थीत एक धागा था
हर मयना धाग की रग देता
मैं जीवा का पीड़ा दासकर
किरमा की पूनकारी बाङ्गने सगी

पहिला फुल्ल मुततरता दा
फुल्ल दूसरा लोकराज दा
सत्त डडीआ सत्तर बेला
तीजा फुल्ल मुशहाली वाला

माण मत्तीआ रग्ग रत्तीआ
बम्म जिवें सन बई पत्तीआ

टुणे टुणे में इस फुनवारी
चिट्टा फुल्ल भमन दा छोहिआ
हाए में मर गई
इह बी होइआ

हत्य फुलवारी पक्डी होई
घागा पाण लगी सा बोई
बम्ब गया पीहडी दा पावा
टुट्टु गई चानण दी सूई

{

इक गीत

(15 अगस्त 1965)

इक बेडीआ दा गीत सी
हत्यबेडीआ दा गीत सी
सरगम सी साडे इस्क दी
'जेल' पचम स्वर सी
ते सतवा स्वर 'मूली' सी
होठ तडप उठठे सन
बहुत-बहुत मुशकिल सी
पर असा गीत गाया सी

पहला पून खाना का
दूसरा पून मोरगात्र का
सात दहलियाँ और गतर खनें
तीसरा पून गुणहानी का

मात का माता, रम म दुर्वा
पावनार्थ जभ कई पतियाँ

सभी प्री में म पूनहारी म
अमा का पिटा पून जादो लगी थी
हाय, मैं मर गयी !
यह क्या प्रमा—

हाय म पूनहारी पनटो म गयी
मैं पाया जाना ही लगी थी
पीडे का पाया पीप गया
और रागनी की मूर्द टट गयी

एक गीत

(15 मार्च 1965)

एक बंदिवा का गीत था
हफबंदिवा का गीत था
हगारे मदन पी मरगम थी
जब पतम मरर था
और मानवा मरर मूनी था
होट तरण उठे थे
बहुत-बहुत मुस्लिम था
पर हमने गीत गाया था

पहिला फुल्ल मुततरता दा
फुल्ल दूसरा लोकराज दा
सत्त डडीआ सत्तर बेला
तीजा फुल्ल खुशहाली वाला

माण मत्तीआ रग रत्तीआ
कम्म जिवे सन कई पत्तीआ

हुणे हुणे में इस फुलकारी
चिट्टा फुल्ल अमन दा छोहिया
हाए में मर गई
इह की होइआ

हत्य फुलकारी पकडी होई
धागा पाण लगी सा कोई
कम्म गया पीहडी दा पावा
टुट्ट गई चानण दी सूई

इक गीत

(15 अगस्त 1965)

एक बेडीआ दा गीत सी
हत्यकडीआ दा गीत सी
सरगम सी साडे इक्क दी
'जेल' पचम स्वर सी
ते सतवां स्वर 'म्ली' सी
होठ तळप उठठे सन
बहुत-बहुत मुशकिल सी
पर असा गीत गाया सी

पहला फूल स्वतंत्रता का
दूसरा फूल लोकराज का
सात टहनिया, और सत्तर बेलें
तीसरा फूल खुशहाली का

मान की माती, रंग म डूबी
योजनाएँ जैसे कई पत्तियाँ

अभी अभी मैं इस फुलकारी मे
जमन का चिट्ठा फूल बाढने लगी थी
हाथ, मैं मर गयी ।
यह क्या हुआ—

हाथ म फुलकारी पकडी रह गयी
मैं घामा डालने ही लगी थी
पीने का पाया वाप गया
और रोशनी की सूई टट गयी

एक गीत

(15 अगस्त 1965)

एक वेडिया का गीत था
हथकडिया का गीत था
हमारे गान की सरगम थी
'जेल पत्रम स्वर था
और सातवा स्वर सूली था
होठ तडप उठे थे
बहुत-बहुत मुश्किल था
पर हमने गीत गाया था

इय बेडीआँ दा गीत सी
 हत्यकडीआँ दा गीत सी
 ते जह वी बसत सी
 आवाज नजरबद सी
 प्रह हुवमा दे हुवम मोठदा
 पैरा दा लोहिआ तोठदा
 तै गीण मुनण यालिआ दे
 मूह ते लाली घूडदा
 सारे देस बिच बिचरदा रिहा
 गलीआ दे बिच फिरदा रिहा
 ते गरम मुच्चा लहू बण के
 रगा बिच तुरदा रिहा

रहमत है ओमे गीत दी
 नेहमत है ओसे गीत दी
 कि बेडीआ दा गीत अज
 पैरा दा गीत है
 पैरा दी मजिल दा गीत है
 ते कडीआ दा गीत अज
 हत्या दा गीत है
 हत्या दी मिहनत दा गीत है

सरगम है साडे इस्क दी
 मिहनतकशा दे इस्क दी
 हुक्म पचम स्वर है
 ते सतवा स्वर सुततरता

हुक्क लैणा—हुक्क देणा
 ते सुततरता ना लोहणी ना खुहाणी
 इक्को राग दी रोही अबरोही

एक बेडिया का गीत था
 हथकड़ियो का गीत था
 और वह भी वक्त था
 आवाज़ नज़रबन्द थी
 यह सभी फरमान टालता
 पैरो का लोहा काटता
 और सुननेवाला बे
 चेहरो पर मुर्खी छिडकता
 सारे देश मे घूमता रहा
 गलिया मे फिरता रहा
 और गम सुब्बा लहू बनकर
 रगो मे चलता रहा

रहमत है उसी गीत की
 नेहमत है उसी गीत की
 कि बेडिया का गीत
 आज पैरा का गीत है
 पैरा की मञ्जिल का गीत है
 हथकड़िया का गीत
 आज हाथा का गीत है
 हाथा की मेहनत का गीत है

हमारे इश्क की सरगम है
 मेहनतकशा के इश्क की
 'हक' पचम स्वर है
 और सातवाँ स्वर 'स्वत त्रता'

हक लेना और हक देना
 स्वत त्रता न छीननी, न छिनवानी
 एक ही राग की आरोही-अवरोही

बहुत—बहुत मुस्किल है
 पर असाँ गीत गाणा है
 भरी महफिन वालियो
 इह गीत बहुत मुच्चा है
 अज साज अपणे कोल ने
 आवाज अपणे कोल है
 पर गीत दी बिसमत दा सवाल है
 राग दी अजमत दा रावाल है

याद रसना एत बिच्च
 दव स्वर बरजित बी हूँदा ए।

शतरज

(मिनम्बर 1965)

तरे कोल नफरत दी सिगरेट
 मेरे कोल सिगरेट दा लाईटर
 आ तरी सिगरेट जला दिया
 इक बडा डूँघा साह भरी
 ते फेर इसदा खुमार बेसी
 रुह लरज जायेगी
 पैर झम उठेगा
 ते सारी दुनीआ
 नाबीज नजर आयेगी

तेरे बड्डे बडेरे
 पग्गा बटादे सन
 हुक्के बटादे सन
 छापा बटादे सन
 मेरे बड्डे बडेरे
 घाह दीआ पलीआ बटादे सन
 लहू दीआ चुलीआ बटादे सन

बहुत-बहुत मुश्किल है
 पर हमको गीत गाना है
 भरी महफिलवालो ।
 यह गीत बहुत सच्चा है
 अब साज अपने पास हैं
 आवाज अपने पास है
 पर गीत की किस्मत का सवाल है
 राग की जज़मत का सवाल है

याद रखना इसमें
 एक स्वर वजित भी होता है ।

शतरज

(मिर्चम्बर 1965)

तेरे पास नफरत की सिगरेट
 मेरे पास सिगरेट का लाइट
 आआ, तुम्हारी सिगरेट जला दू
 एक बहुत गहरी साँस लेना
 और फिर इसका खुमार दखना
 रूह लरज जायेगी
 पर झूम उठेगा
 और सारी दुनिया
 नाचीज तजर आयगी

तरे बुजुग,
 पगडी बदलते थे
 हुबका बदलते थे
 अँगूठी बदलते थे
 मेरे बुजुग
 घास की गाँठ बदलते थे
 लहू का चुल्हू बदलते थे
 यह सभी दोस्ती के चिह्न थे

असी होठा दे झूठ ब दलागे
होठ मेरे झूठ तरे
होठ तेरे झूठ मेरे
इह दोस्ती दी नवी रसम है
ते नवी रसम नू
वेखण दा नवा नुकता है
इस्कीआ गजला पुराणी बात है
रह नफरत दी गजल दा
इक बडा नवा मकता है

पुराणे दोसता दा फिक्कर काहदा
विदा कर खुदा हाफिज आख के
सिरफ हथिआर रख लै
पुराणे दोस्त दी
पुराणे बक्न दी
इक प्यारी निशानी समझ के

ते एस खुशी विचव
हमसाइआ नू बुला
जग दी चीपट विछा
हत्थ तेरे
टक गोलीआ—नरदा बिगानीआ
ते चाल मेरी

अजीब खेड है शतरज दी
मेरे दोस्त ।
इह खेड दा नवीन करण है

हम होठों के झूठ बदलेंगे
होठ मेरे, झूठ तेरे
हाठ तेरे, झूठ मेरे
यह दोस्ती की नयी रस्म है
और नयी रस्म को
देखने का नया मुक्ता है
इश्किया गजलों पुरानी बात है
यह नफरत की राजल का
एक नया मकता है

पुराने दोस्तों का गम कौसा
विदा कर दे
खुदा हाफिज कहकर
सिफ हथियार रख ले
पुराने दोस्त की
पुराने वक्त की
एक प्यारी निशानी समझकर

और इस खुशी में
हमसाये की आवाज दे
जग की शतरज खेल
हाथ तेरे
टक तोपें मोहरे बेगाने
और चाल मेरी

अजीब खेल है शतरज का
मेरे दोस्त !
यह खेल का नवीनीकरण है

दास्तो !

(17 मितम्बर, 1965)

रात दा उलाभा
बि दिहूँ जाण लग्गा सी
मेरी दहलीज टप्प बे
मुठ तारे चुरा बे लै गया

दिहूँ दा शिक्का
बि रात जाण लग्गी सी
मेरी दहलीज टप्प बे
मुठ किरना चुरा बे लै गई

हाठ चादी दे बोल सन
मिसरी दा टोटा घोल बे
फेर रात मुसकराई
ते दिहूँ गुढकिया
तारा कोई घटिया नही
किरना दा कुछ नही बिगडिया

भेडा दी चोरी
चरवाहिया दी चोरी
बदूका दी चोरी
सिपाहीआ दी चोरी

इह कहीआ चोरीआ ने दोस्तो !
इलजाम ने केहो जहे !
ते राजनीती दे हत्य बिच्च
इह जाम ने केहो जह !

जो बेहडा सजाये जग दा
उस हुसन दी चोरी करो
जो काइदा सिखाये अदब दा
उस इस्क दी चोरी करो

दोस्तो !

(17 सितम्बर 1965)

रात का शिक्वा
कि दिन जाने को था
मेरी दहलीज पार करके
मुटठी भर सितारे चुराकर ले गया

दिवा का शिक्वा
कि रात जाने को थी
मेरी दहलीज पार करके
मुटठी भर किरणें चुराकर ले गयी

हाठ चादी के बटोर थे
मिसरी का एक टुकड़ा घोल कर
फिर रात मुसकरायी
और दिन हँस लिया
सितारा कोई कम नहीं
किरणें पूरी की पूरी थी

भेडा की चोरी
चरवाहो की चोरी
बदूबा की चोरी
सिपाहियो की चोरी

यह कैसी चोरियाँ है दोस्तो
यह इलजाम कैसे हैं !
और राजनीति के हाथ मे
यह जाम बस हैं !

जो दुनिया का आगन सजाये
उस हुस्न की चोरी करो
जा अदब के कायदे सिपाय
उस इस्क की चोरी करो

जा रत्न बनाद जीऊन ग
उग रत्न दा चार कर
या विमानत निउे इनान दो
उग बनन गी चारी करो

गिन दा दहलीड ग्य के
बाहुग दा बूहा माहन के
गह दीनत चुराआ
होठ चांगी द कौल न
मिनरा दा टोग घोल व
बो. ऊत्र साओ

गह दीनता न साराआ
ज चोरी करो
ता चोराआ मुबारक
जे ऊत्रा साराआ
तां ऊत्रा बी प्याराआ

इक खत

चन्न सूरज दो दवाना
कलम ने डोबा लिआ
लिखतम तमाम घरती
पढतम तमाम लोक

हुक्मराना दोलो
बाचीचा, बहूका ते दे-न
ब-प तो पहिचा
३३ ३३ ३३ लयो

जो जीने की रस्म चलाय
उस इल्म की चोरी करो
जो इन्सान की विस्मत लिखे
उस कलम की चोरी करो

दिल की दहलीज पार कर
बाहो के विवाड खोलकर
यह दीलत घुराओ
होठ चाँदी के कटोरे हैं
मिसरी का टुकड़ा घोलकर
कोई तोहमत लगाओ !

ये सभी दीलतें हैं
अगर चोरी करो
तो सब चोरियाँ मुबारक !
अगर तोहमत लगाओ
तो सब तोहमतें प्यारी है ।

एक खत

चाँद सूरज दो दवातें
कलम ने डोबा लिया
लिखतम तमाम घरती
पढतम् तमाम लोग

हुक्मराना दोस्तो
गोलियाँ बन्दूकें और एटम
चलाने से पहले
इस खत को पढ लेना

जो रसम चलाये जीऊण दी
उस इलम दी चोरी करो
जो किसमत लिखे इनसान दी
उस कलम दी चोरी करो

दिल दी दहलीज टप्प के
बाहवा दा वूहा खोहल ने
इह दीलत चुराओ
होठ चादी दे कौल ने
मिसरी दा टोटा घोल ने
कोई ऊज लाओ

इह दीलता ने सारीआ
जे चोरी करो
ता चारीआ मुबारक
जे ऊजा लगाओ
ता ऊजा वी प्यारीआ

इक खत

च न सूरज दो दवाता
कलम ने डोबा लिआ
लिखतम तमाम घरती
पढतम तमाम लोक

हुकमराना दोस्तो
गोलीआ, बटूका ते ऐटम
चलाण तो पहिला
इह खत पढ लवो

जो जीने की रस्म चलाये
उस इल्म की चोरी करो
जो इन्सान की किस्मत लिखे
उस कलम की चोरी करो

दिल की दहलीज पार कर
बाहो के किवाड़ खोलकर
यह दीलत चुराओ
होठ चाँदी के कटोरे हैं
मिसरी का टुकड़ा घोलकर
कोई तोहमत लगाओ !

ये सभी दीलतें हैं
अगर चोरी करो
तो सब चोरियाँ मुबारक !
अगर तोहमत लगाओ
तो सब तोहमतें प्यारी हैं ।

एक खत

चाँद सूरज दो दवातें
कलम ने डोबा लिया
लिखतम तमाम धरती
पढतम् तमाम लोग

हुकमरानो दोस्तो
गोलियाँ, बन्दूकें और एटम
चलाने से पहले
इस खत को पढ लेना

साइंसदानो दोस्तो
 गोलीआ, बडूका ते ऐटम
 बनाण तो पहिला
 इह खत पढ लवो

सितारिआ दे हरफ
 ते किरना दी बोली
 जो पढनी नही अऊंदी
 किमे आशान-अदीव तो पढवा लवो
 अपनी किमे महबूब ता पढवा लवो
 त हर इव मा दी इह मात बोली है
 घडी बु बँठ जावो किसे वी थाते
 ते खत पढवा लवो किसे वी मा ता

ते फेर आवो मिलो
 कि मुलका दी हद् जित्थे है
 इव हद् मुलक दी
 ते मेच के बेवो
 इव हद् इलम दी
 इव हद् इशक दी
 ते फेर दस्मो कि किस दी हद् कित्थे है !

चन सूरज दो दवाता
 अज इव डोबा लवो
 ते एस खत दी पहुँच देवो
 ते दुनीआ दी सुख साद दे
 दो अनखर वी पा दिजो

तुहाडी—आपुनी अरती
 तुहाडा खत भडोनी दी
 बडा फिर करदी पई।

साइसदानों, दोस्तों
गोलियाँ, बंदूकें और एटम
बनाने से पहले
इस खत को पढ़ लेना

सितारों के हरफ
और किरनों की बोली
जो पढ़नी नहीं आती
किसी आशिक—अदीब ने पढ़वा लेना
अपनी किसी महबूब से पढ़वा लेना
और हर एक माँ की यह 'मात-बोली' है
तुम बैठ जाना किसी भी ठाव
और खत पढ़वा लेना किसी भी मा से

फिर आना और मिलना
कि मुल्क की हृद जहाँ है
एक हृद मुल्क की
और नाप कर देखो
एक हृद इलम की
एक हृद इस्व की
और फिर बताना कि किसकी हृद कहीं है

चाँद सूरज दो देवातों
हाथ में एक कलम लो
इस खत का जवाब दो
और दुनिया की सुख-सार के
दो हरफ भी डाल दो

तुम्हारी-अपनी घरती
तुम्हारे खत की राह देखती
बहुत फिकर कर रही

